गृहा मानीहमानस्य न चैवावदतो मृषा ।
न चानिक्षिप्तदण्डस्य परेषामनिकुर्वतः ॥ १३ ॥

तदयं गृहसुखावबद्धहृदयस्तत्साधनोद्यतमतिर्जनः ।

यदि धर्ममुपैति नास्ति गेह-
मथ गेहाभिमुखः कुतोऽस्य धर्मः ।
प्रशमैकरसो हि धर्ममार्गो
गृहसिद्धिश्च पराक्रमक्रमेण ॥ १४ ॥

इति धर्मविरोधदूषितत्वा-
द्गृहवासं क इवात्मवान् भजेत ।
परिभूय सुखाशया हि धर्मं
नियमो नास्ति सुखोदयप्रसिद्धौ ॥ १५ ॥

K 108

नियतं च यशःपराभवः स्या-
दनुतापो मनसश्च दुर्गतिश्च ।
इति धर्मविरोधिनं भजन्ते
न सुखोपायमपायवन्नयज्ञाः ॥ १६ ॥

अपि च । सुखो गृहवास इति श्रद्धागम्यमिदं मे प्रतिभाति ।

नियतार्जनरक्षणादिदुःखे
वधबन्धव्यसनैकलक्ष्यभूते ।
नृपतेरपि यत्र नास्ति तृप्ति-
र्विभवैस्तोयनिधेरिवाम्बुवर्षैः ॥ १७ ॥

सुखमत्र कुतः कथं कदा वा
परिकल्पप्रणयं न चेदुपैति ।
विषयोपनिवेशनेऽपि मोहा-
द्व्रणकण्डूयनवत्सुखाभिमानः ॥ १८ ॥

बाहुल्येन च खलु ब्रवीमि—

प्रायः समृद्ध्या मदमेति गेहे
मानं कुलेनापि बलेन दर्पम् ।
दुःखेन रोषं व्यसनेन दैन्यं
तस्मिन् कदा स्यात्प्रशमावकाशः ॥ १९ ॥

अतश्च खल्वहमत्रभवन्तमनुनयामि—

मदमानमोहभुजगोपलयं
प्रशमाभिरामसुखविप्रलयम्।
क इवाश्रयेदभिमुखं विलयं
बहुतीव्रदुःखनिलयं निलयम्॥ २०॥

सतुष्टजनगेहे तु प्रविविक्तसुखे वने।
प्रसीदति यथा चेतस्त्रिदिवेऽपि तथा कुतः॥ २१॥

परप्रसादार्जितवृत्तिरप्यतो
रमे वनान्तेषु कुचेलसंवृतः।
अधर्ममिश्रं तु सुखं न कामये
विषेण संपृक्तमिवान्नमात्मवान्॥ २२॥

इत्यवगमितमतिः स तेन पितृवयस्यो हृदयग्राहकेण वचसा सबहुमानमेव तस्मिन् महासत्त्वे सत्कारप्रयोगविशेषेण प्रवेदयामास॥

तदेवं शीलप्रशमप्रतिपक्षसंबाधं गार्हस्थ्यमित्येवमात्मकामाः परित्यजन्तीति। लब्धास्वादाः प्रविवेके, न कामेष्वावर्तन्त इति प्रविवेकगुणकथायामप्युपनेयम्॥

॥ इत्यपुत्रजातकमष्टादशम्॥

(२) अंजीर

नाम

संस्कृत—अंजीर
हिंदी—अंजीर
अंग्रेजी—फिगट्री
Figtree
फारसी—अंजीर
अरबी—तीन
पंजाबी—हजीर
बंगाली—अंजीर
मराठी—अंजीर
गुजराती—अंजीर
कर्णाटकी—मेडु येड्
लैटन—फाईकसकेरिका

गुण

एक वलायती मेवा है मीठा है रंग इसकालाल व काला होता है, मिरगी, फालज और बलगमके लिये लाभकारी है पेशाब का मुशकल से आना या गुरदा पतला पडजाना इनके लिये लाभकारी है पचने में स्वादी है और लहू के विकार वा अधरंग को दूर करे है, ताज़ी अंजीर सूखी से ज्यादा लाभकारी है इसका शर्बत खांसी को दूर करता है, तासीर गर्मतर है मात्रा ५ दाने तक ॥

बदला—चलगोज़ा

(३) अगर

नाम

संस्कृत—अगर
हिंदी—अगर
अंग्रेज़ी—ईगलवुड
Eagewood
अरबी—ऊदगरकी
फारसी—कशवेववा
पंजाबी—अगर
बंगाली—अगर
मराठी—अगर
गुजराती—अगर

गुण

ए ; सुगंधित भूरे रंग की लकड़ी है जो पानीमें डूब जाती है कौड़ी है। वात, पित्त, कान के रोग और कोड़ का नाश करनेवाली है, पठ्ठों को ताकत दे। खफकान और रैहम की सरदी के दूरकरने वाली है और सुदा खोले लेप करने में सभ से अच्छी है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ३ माशे॥

बदला—दालचीनी, लौंग, केशर॥

(४) अमलतास

नाम
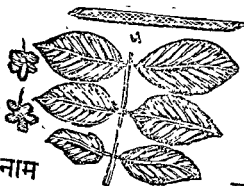
संस्कृत—आर्गवद्ध

हिन्दी—अमलतास वग्रनवहेड़ा

पंजाबी—अंबलतास

तैलंगी—रक्षकाया

अंग्रेज़ी—पुडिंगपाईपट्री

• pudding piPetree

फारसी—ख्यारेशंवर

अरबी—फलूम ख्यारे शंबर

बंगाली—सोनालू

मराठी—बहवा

गुजराती—गुरमालो

कर्णाटकी—हेगाको

लैटन—केश्याकि सचुला

नैपाली पहाडी—दिफोगजवृत्ता

गुण

इसका बड़ा वृक्ष होता है पत्र लाल और फूल पीले लगते हैं फली इसकी डेढ हाथ लंबी गोल होती है जो पहिले सवज और पकनेपर काली होजाती है इसका गूदा इस्तमाल में आता है लोहू का जोश दूर करे स्वादी है वाई और सूल कोदूर करे दस्तावर है बचों औरगर्भवती स्त्रियों के लिए लाभकारी है यह एक अच्छा जुलाव है जो बचों और गर्भवती स्त्रियों को नुकसान नहीं पहुंचाता इसके पत्र कफ को दूर करते हैं और मल को ढीला करते हैंतासीर गर्म तर है ॥

बदला—तरंजवीन ॥

(५) अनार

नाम	गुण
संस्कृत—दाड़िम तैलंगी—डानिम्मचेट्ट अंग्रेजी—पमग्रनेट pomegranate फारसी—अनार अरबी—रुम्मान पंजाबी—अनार कर्णाटकी—दालिब गुजराती—दाड़यम बंगाली—दाड़िम मराठी—डालिंब लैटन—पयुनिकाग्रानेटम तामिली—मादलई चेहेडी नैपाली पहाडी—धालेंदाड़िम	अनार तीन प्रकार का होता है (मीठा, खट्टा, खटमिठा) मीठा अनार अफारा करताहै पेशाब लाता है जिगर को ताकत देता है प्यास बुझाता है इसका अर्क और छाल दस्त बंद करते हैं ॥ खट्टा अनार सरद खुश्क है मेधा जिगर और सीनेकी हरारत बुझाताहै पित्तके दस्त और क के लिये लाभकारी है ॥ खटमिठा अनार सरद तर है मेधा और जिगर को ताकत देता है इसका पानी निचोड़कर पीने से सफरावी दस्त कै और हिचकी दूर होती है। तासीर मीठे की सर्द

खुश्कमोहतदिलऔरखट्टेकीसर्दतरहै।अनारकेछिलकेकोनसपालकहतेहैं॥

(६) अगस्तीया

नाम

संस्कृत—अगस्तिया
हिन्दी—अगस्तिया हदगा
तेलंगी—अर्नीसे अविसि
अंग्रेजी—लार्जफलावर्ड एगेटा
Large Flowered Agita
पंजाबी—अगस्तीया
बंगाली—वक
कर्णाटकी—अगसेपमरनु
तामिलि—अरगति
मरहाटी—अगस्ता
लैटन—एगाडीगलांडी फलोग
गुजराती—अगथियो

गुण अगस्तिया

शीतल है रूखा है कौड़ा पित्त और कफ को दूर करे चौथीए ताप को भी हटावे है; रतोंधे को दूर करे और पीनस रोग के लिये भी लाभकारी है गर्मी दूर करे । इसके पत्र सैंजने जैसे होते हैं अकसर करके इसके ऊपर नागर बेल चढ़ती है फूल इसके लाल और सफेद होते हैं इसकी फली बड़ी नर्म होती है तासीर सर्द खुश्क है ॥

नाम

संस्कृत—वासक, आटरूख
हिन्दी—अड़ूसा, विसोंटा
तैलंगी—आडसारं, आडापाकु
पंजाबी—बांसा
गुजराती—अरडुशो
कर्णाटकी—आड़सोग
तामिलि—अधडोडे
मरहटी—अडुलसा
बंगाली—वकस
लैटन—अधटोडा, वासीका
नैपाली पहाड़ी—अलेहु

एक बूटी छे उंगल ऊंची बेद की तरां है फल इसके सफेद और पत्र सब्ज लंबे अनीदार अमरूत की तरां होते हैं एक लाल फूल का भी होता है स्वाद इसका फीका होता है फूल इसका दिक और सफरा की तेजी लहू का जोश पेशाब की जलन को हटाता है कौड़ा और कसैला है दिल को फैदा देवे आवाज साफ करे और हलका है खांसी तप प्यास वमन और कोढ़ का नाश करे पेशाब की लाली दूर करे इसकी जड़ दमा, खांसी, तप, बलगम के वास्ते अच्छी है इसके खाने से हैज जारी होता है तासीर गर्मखुश्क है और फूल ठंडे होते हैं॥

(८) अनानास
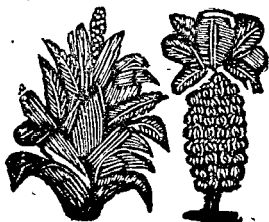
नाम

संस्कृत—अनंनास
हिन्दी—अनानास
अंग्रेजी—पाईन एपल
मरहटी—अननस
पंजाबी—अनानास
गुजराती—अनंनास

गुण

एक मेवा शरीफे की शकल का होता है जो बाहिर से लाल और अन्दर से जरद होता है और स्वादी होता है दिमाग और जिगर को ताकत देनेवाला खफकान को दूर करे कम जोरी और सिर दर्द मिजाज वाले को ताकत दे सफरावी हरारत को दूर करे यह मेवा हिन्दुस्तान में थोड़े चिर से आया है तासीर ठंडातर है मात्रा २ तोला।
बदला—सेब

अनंत मूल ९

नाम

संस्कृत—सारिवा
हिंदी—अनंतमूल गोरीसर कालीसर
पंजाबी—धमांह
तैलंगी—नीलतिग
अंग्रेजी इंडीयन सारसा
Indian sarsa Parila
बंगाली—श्यामलत
गुजराती—कपरी
कर्णाटकी—सारिवा
लैटन—होमिडसमेस
मराठी—उपलसरी
नेपाली पहाड़ी—दुरुकोर्सा

गुण

गोरीसर मलरोधक गरमी और लहू के विकार को दूरकरे ठंडीहै और कालीसर वात, लहू का विकार, पेशाब वमन और तप को दूर करे, बलगम को दूर करे, कालासर और गोरीसर की बेल होती है, पत्र इस के अनार जैसे होते हैं, और पत्रों में सफेद छींटे होती हैं और बेल की जड़ में से कपूर कचरी की तरा सुगंधी आती है और इसमें २ फली होती हैं ॥

अलसी१०

नाम

संस्कृत—अतसी
हिंदी—अलसी
तैलंगी--नलपगसिचेटू
अंग्रेजी--कामन फलेकससीड
common Flax seed
फारसी--तुखमेकतान
अरबी--बजरूलकतांन
मराठी--जवस
कर्णाटकी--असगे
लैटन--लींनीसेमीना
बेंगाली--मसिना

गुण

अलसी मधुर बलदायक कुछ कदर वात और कफ करने वाली पित्त और कुष्ट को दूर करे, भारी है फोड़ा, पेटदरद और सोज का नाश करे है पेशाब जारी करे, मसाने की पथरी तोड़े, सुवाद कौड़ा, वीर्य्य का नाश करे, इस के पत्र खांसी, कफ, वात और स्वास रोग को दूर करते हैं। एक छोटे२ बीज होते हैं रंग लाली पर और अनाज की तरां पैदा होते हैं तासीर गर्म खुशक मात्रा १० मासे ॥ बदला--मेथी

(११) असगंध

नाम

संस्कृत--अश्वगंधा
हिंदी--असगंध
तैलंगी--पिल्लिअंगा
अंग्रेजी--विंटरचेरी
winter cherry
फारसी--मेहमन बर्री
बंगाली--अश्वगंधा
मरहटी--असकंध
गुजराती--अखसंध
करणाटकी--असादु
लैटन--फाईसेलिस
नैपाली पहाड़ी--असवगध

गुण

इसकी झाड़ी होती है फल पनसोखे की तरां गोल होते हैं उसके नीचे छोटी मूली की तरां होती है जो अंदर से ज़रद होती है इसको असगंध कहते हैं कौड़ी और कसैली होती है वीर्य को बढ़ानेवाली खांसी, स्वास, रोग सोज और गंठिया के लिये लाभकारी है ज़खमों के लिये भी अच्छी है शरीर को बल देनेवाली वात कफ और सफेद कुष्ट को दूर करे और बलगम की खराबियों को दूर करे है। इसके पत्तों का लेप गंठीए के लिये लाभकारी है तासीर गर्म खुश्क है। मात्रा ५ मासे ॥

(१२) अरणी

नाम
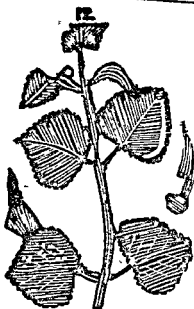
संस्कृत—अग्नीमन्थ
हिन्दी—अरणी, अगेथु
पंजाबी—चित्रा
तैलंगी—नेलिचेट
बंगाली—गणिर
मराठी—सोरइल
करणाटकी—नरूबल
लैटन—कलोरेडन
नैपाली पहाड़ी—गिन्यारी

गुण

एक झाड़ की शकल का दरख्त है पत्ते गोल और छोटे खरखरे होते हैं। फूल सफेद और फल करोंदे की तरह छोटे होते हैं। कफ, सोज बवासीर पांडु रोग विष और मेदरोग का नाश करे बलदायक है और वात को दूर करे है छोटी अरणी के गुण भी समान हैं किन्तु उपनाह में इसका लेप हितकारी है और सोज को दूर करे। तासीर गरम तर है मात्रा ६ मशे ॥

नाम

संस्कृत—आमलकी
हिन्दी—आमला
पंजाबी—औला
तैलंगी—उसरकाव
अंग्रेजी—ऐंबलक मिरोबेलन
Emblic may Robalan
फारसी—आमलज
गुजराती—आंवला
करणाटकी—नेली
लैटन—फिलोंखस एंबिलक
नैपाली पहाड़ी—अंब, आवला

गुण

एक मशहूर फल है गोल ज़-रद रङ्ग कुछ कसैला सवाद होता है कावज़ है, मेथा और आंदरां को साफ करे दिलको ताकत देवे नेत्रों और दमाग़ को भी ताकत देता है बालों के लिये लाभकारी है लहू का विकार तप कै, अफरा और सोज को दूर करे है सौदावी मुवाद को निकाले है और सूखे औले खट्टे कसैले वीर्य को बढ़ानेवाले और नेत्रों के लिये लाभकारी हैं और शरीर पर लेप करने से कान्ति बढ़ती है इस के बड़े २ दरखत जङ्गलों बागों में होते हैं तासीर सरद खुशक है मात्रा१० माशे ॥

बदला—काल।हरीड़ ॥

(१५) आलू बुखारा

गुण

एक मशहूर खट्टा फल है तबी-यत को नर्म करे सफरावी बुखार को दूर करे लहू और सफरा के जोश को दूर करे है शरीर की हरारत और पित्त को हटावे है दस्तावर है हाजमा है तासीर सरदतर है बवासीर के लिये भी लाभकारी है इसके दरखत अक-सर अरके बलख बुखारे और सिंहल द्वीप में होते हैं एक देशी आलूबुखारा इस देश में भी उत्-पन्न होने लगपड़ा है रंगलाल होता है मात्रा १५ दाने तक।

बदला—इंवली ॥

नाम

संस्कृत—आरुक

हिन्दी—आलू बुखारा

अंग्रेजी—चैरी पलम पून

Cherry Plum Pune

फारसी—आलूचा

अरबी—इज्जास

कर्णाटकी—आरुक

मरहटी—वीरारुक

गुजराती—आलु

लैटन—पूनमकोमयनीस

अमरूद १५ 23

नाम

संस्कृत---पेरुक अमृतफल
हिंदी ---अमरूद
तैलंगी---जामपंडु
अंग्रेजी---गवावार्वेट
फारसी---अमरूत
अरबी---कमशरी
मराठी---पांढरेपेरू
गुजराती--जामफल
लैटन--सिडीयं
पँजाबी--अमरूत

गुण

इसके दरखत अकसर बागों में होते हैं पत्ते इसके आम के पत्तों से कुछ छोटे फल इसके वर्षा और शिशरऋतु में होते हैं फल कई अन्दर से लाल और कई सफेद होते हैं, तासीर ठंढी तर स्वादु होते हैं कफ करनेवाले वात और वीर्य को बढ़ाने वाले दिलको ताकत देते हैं खफकान का नाश करे दमाग को तर करे और पित्त को दूर करते हैं रोटी खाने से पहिले खाने पर कबजी करते हैं इसके पत्ते दस्तों को बन्द करते हैं और सड़ेहुए पत्ते नीलेथोथे का काम देते हैं। तासीर ठंढीतर है। बदला---बीह

इलायची छोटी १७

नाम
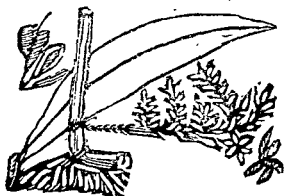
हिन्दी—छोटी इलाची सफेद इलाची
बंगाली—छोटी एलाच
गुजराती—एलचीका गदी
मराठी—वेलची
तैलंगी—एलाकु
फारसी—हैल हिल हाल
अरबी—काकिले सिगार
अंग्रेजी—शिलिसर, कार्डामोम
Sheleser, Cardamo
लैटन—इलेटिरिया कार्डामोम

गुण

इसके बूटे अदरख की तरह होते हैं फूल सफेद और सुगंधित लाल इलाची की तरह होते हैं इसके बीज काले होते हैं सुवाद कुछ कौड़ा और ठंढीहोती है सीना हलक और मेथे की रतूबतों को खुशक करती है खफकान के, उबाक, जीमचलाना और मुंह की बू को हटाती है गुरदे वा मसाने की पथरी तोड़े खांसी और बवासीर को भी दूर करे मात्रा ३ या ४ माशे ॥
बदला—बड़ी इलाची

१८ इन्द्रायण
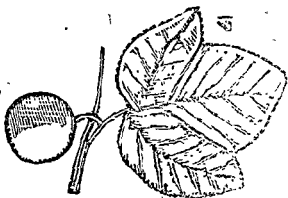
नाम

संस्कृत—इंद्रवारुणी
हिन्दी—इंद्रायण
पंजाबी—तुमां
तैलँगी—एतीपुच्छा
अंग्रेजी—कोलोसिंथ
Colocynth
फारसी—खुरपजा तलख
अरबी—हंजल
बंगाली—राखालशशा
गुजराती—इंद्रवाणीयुं
कर्णाटकी—हामेके
मरहटी—लघुइंद्रवण
लैटन—सिट्रलल

गुण

इसकी बेल अकसर करके खारी जमीन पर पैदा होती है फूल छोटे २ कंडयां वाले और फल पीले रंग के पत्र सावे इंद्रायण के फल यां मूल के साथ जुलाब दियाजाता है बलगम और गलाजत को दस्तों की राह निकाले मरद मरजों के लिये लाभकारी है दमाग को साफ करे मवाद फोड़ा उदर रोग, कफ, कोढ़, और ज्वर को हरे है पांडु रोग और सब तरह के पेट के रोग दूर करे तासीर गर्म खुशक मात्रा १ मा-
शे से ६ माशे तक ॥ बदला—हुब्बलनील

इलायची बड़ी १६

नाम	गुण
संस्कृत—स्थूलैला हिन्दी—बडी इलाची फारसी—हैलकला अरबी—काकिले किबार पंजाबी—मोटी लाची अंग्रेजी—लार्ज कोर्डामोम Large cardamom मराठी—थोरवेला गुजराती—मोटी एलची कर्णाटकी—परड़लकी लैटन—एथोम सुव्युलेटम्	मोटी इलाची पाक में स्वादी है हलकी है कफ और वात को दूर करने वाली प्यास मुख के रोग और शरीर रोग को दूर करे है हाजमा और पथरी के लिए लाभकारी है मेदे को ताकत देती है दस्त बन्द करे तासीर गर्म खुश्क है, मात्रा ५ माशे। बदला—छोटी इलाची

सोंठ २०
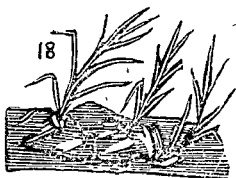
नाम

संस्कृत–सुंठी
हिन्दी–सोंठ
पंजाबी–सुंढ
तैलंगी सोंठी
अंग्रेजी–डाईजिंजर
Dygingar
फारसी–जंजबील
बंगाली–सोंठ
गुजराती–सुंठय
करणाटकी–सुंठि
मराठी–सुंड
नेपाली पहाड़ी–शुंवो

गुण

एक प्रकार की जड़ होती है जिसका रंग सफेद मिट्टी की रंगत का होता है मेदा जिगर को ताकत देवे है, हाजमा है बलगम को निकाले है, कै बंद करे, फालज और सरदी के दर्द को दूर करे है, पेट और आंतों के कीड़े मारे है, कंड़ रोग संग्रहणी और पित्त का नाश करे खाने में स्वादी है वमन, शूल खांसी दिल के रोग और संग्रहणी का नाश करे, तासीर गरम खुराक है मात्रा ७ मासे।

बदला–दार फिलफिल

गुण

इसकी झाड़ी कांटेदार होती है पत्तों के ऊपर कांटे होते हैं फूल पीला होता है इसके दूधका रंग सुनैहरी होता है फूलों पर भी कांटे होतेहैं फूलों में से काले बीज निकलते हैं बीजों से तेल निकलता है यह तेल कई तरां के त्वचा रोगों को नाश करता है सुवाद कौड़ा होता है सत्यानाशी कफ, रक्त पित्त और कुष्ट को दूर करती है पथरी और सोज का भी नाश करती है दस्तावर है इस की जड़ को चोक कहते हैं, तासीर गर्म खुशक है ॥

नाम

संसकृत–कटुपर्णी, स्वर्णक्षीरी
हिंदी–सत्यानासी कटेरी (चोक)
पंजाबी–ममोली
अंग्रेजी–गोंबेंफथिसल
Gamboge Thistle
बंगाली–स्वर्णक्षीरी
मराठी–कांटेधो
गुजराती–दारुडी
करणाटकी–चिकवणिकेपभेद
लैटन–आरगिमनी
नैपाली, पहाड़ी–सेहुडभेद

सरसों ४४

नाम

संस्कृत–सरपप
हिंदी–सरसों
तैलंगी–पाचाओशवालू
अंग्रेजी–सिनापिसश्रालबा
sinapisallea
फारसी–सरपप
अरबी–उरफे अर्बीयद
पंजाबी–सरहों, चिट्टी सरहों
बंगाली–सरिसा
गुजराती–शरशव
करणाटकी–बिलीसमासेव
मराठी–शिरस
नेपाली पहाड़ी–तुयुरका

गुण

सरसों चरपरी, कड़वी, तेज गरम, अग्निदीपक कुछ रूखी वात कफ कुष्ठ, शूल, कृमि, और पीड़ा को दूर करे सफेद सरसों चरपरी, कौड़ी, गरम, बवासीर, त्वचा के रोग सोज, जखम और विपका नाश करे सरसों के पत्रों का शाक अमल पित्त कारक कसैला भारी स्वादी गरम खारी और कफ हारी है। सरसों एक प्रकार का धान है इस का दाना राई के बराबर होता है इसका तेल निकलता है मशहूर है। तासीर गर्म खुराक माशा ६ मासे बदला अलसी वा राई

गुण

एक प्रकार का घास होता है पत्र नील की तरां होते हैं फूल लाल और बारीक फलीयां के ऊपर रुयां होती है दुसरी प्रकार की फलीयों के ऊपर रुआं नहीं होती श्वेत सरफोंका पृथ्वी पर फैला होता है पत्र लाल और फूल श्वेत सरफोंका लहू साफ करे सुद्दा खोले खांसी, दमा बवासीर दिलके रोग और बलगम को दूर करे है सोदावी बुखार और जिगर तिली की बीमारी फोड़ा फुंसी सरतान और आतशक दूर करे इसका अर्क जैहरीला होता है लाल से श्वेत अधिक गुणकारी होता है और रसायण में काम आता है तासीर गर्म तर मात्रा ४ मासे ॥ बदला—मुर्दा

नाम

संस्कृत—शरपुंखा
हिंदी—सरफोंका
तैलंगी—प्रांपोराचट्ट
अंग्रेजी—परपलेट परोफ्रिया
Purpletphrsia
पंजाबी—गोमा, मुठालाबूटी
बंगाली—बननील
मराठी—उनहाली
लैटन—टैफरोर्फ्राया
फारसी—परमल ऐफरोशाया

नाम

संस्कृत–शणपुष्पी
हिंदी–सन, झुनझुनियां
तैलंगी–शन मजुपेल
अंग्रेजी–फलावसहेंप
Elax Hamp
फारसी—लादना
बंगाली—बनशनई
मराठी—ताग
गुजराती–शण
करणाटकी–गिलुगिचि
लैटन–क्रोटेलेरीया

गुण

इसकी खेती हिंदुस्तान के बहुत स्थानों पर होती है झाड़दार अंडे की तरह पत्र फलाकार फूल पीले फल लंबा और खोखला होता है काम में बीज और पत्र आते हैं। सन कड़वी, कसैली खट्टी मल को दूर करने वाली बलगम, अजीर्ण तप और रक्त विकार को दूर करे पारे को बांधने वाली है गर्म वात कफ और अंगों के टूटने को दूर करे इसका फूल प्रदर रोग और लहू विकार को दूर करे है॥

शीसम २५

नाम

संस्कृत—शिंशपा
हिंदी—सीसम्
पंजाबी—टाहली
तैलंगी—जिट्टरे गुचेट्ठ
अंग्रेजी—ब्लैकवुड सिसट्री

Black Wood sissotree

अरबी—सासम्
बंगाली—शिशुपाल
करणाटकी—कारीपद्दविड्ड
गुजराती—शिशम्
मरहटी—कालाशमवी
लैटन—अलबरजोया
नैपाली पहाड़ी—सिसो

गुण

इसके वृक्ष जंगलों में बड़े२ होते हैं पत्र इसके नोक दार बेरी की तरां होते हैं फूल बहुत छोटे २ और गुच्छे में होते हैं फली इस की बहुत पतली और चपटी होती है इस में से छोटे२ चपटे बीज निकलते हैं, इसकी छाल कलसनी भूरे रंग की होती है काले रंग के सीसम भी इसी प्रकार के होते हैं मेदे के रोग श्वेतकुष्ट वमन फोड़ा दाह लहू का विकार और कफ को हटाने वाला है, तीनों प्रकार के सीसम वर्ण को सुन्दर करने वाले हैं तासीर गर्म खुश्क मात्रा ८ माशे है॥

सिंघाड़े २६

नाम

संस्कृत—शृंगाटक

हिन्दी सिंघाड़े

अंग्रेजी—वाटर केलटराप
Water calteop

फारसी—सुरंजान.

गुजराती—शिगोंडा

बंगाली—पाणिफल

मराठी—शिंगाडे

तैलंगी—परिकेगड्डु

गुण

संघाड़े सरोवरों में होते हैं इस को तीन २ धार वाले फल लगते हैं इस की गिरी को सुखा कर रखते हैं वीर्य को बढ़ाने वाले वात और कफ को दूर करते हैं ताकत देते हैं तप और गुरदे की खांसी लहू या दिलकी मोज को दूर करते हैं मसूड़ों को ताकत देते हैं दंद साफ करते हैं और मुंह से लहू आने के लिए लाभकारी हैं तासीर ठंडी खुश्क है॥

२७ सौंफ
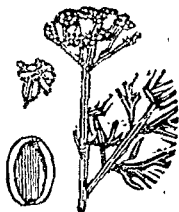
नाम

संस्कृत—मधुरिका
हिन्दी—सौंफ
अंग्रेजी—फैनलसीड
Fenel seed
फारसी—बादीयां
अरबी—राजयानज
नैपाली पहाड़ी—लफ
बंगाली—मौरी
गुजराती—वरियाली
कर्णाटकी—कासंद्धसिगे

गुण

एक घास का बीज होता है रंग पीला सबज़ सुवाद कुछ मीठा दिल की दरद को आराम दे है दस्त खांसी और दर्मे को दूर करे हैं हाज़मा है पेट दर्द को दूर करे बलगम तप सूल नेत्रों के रोग और प्यास को दूर करे पेशाब लावे भूख बढ़ावे गुरदे और मसाने के सुद्दे को खोले तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ६ माशे।
बदला—तुखम खरफस

नाम
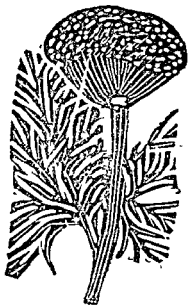
संस्कृत—शतपुष्पा
हिंदी—सोया
तैलंगी—पेद्दसदापचेट्ट
अंग्रेजी—डिलसीड
Dillseed
फारसी—शूत, तुरामेशूत
अरबी—शीतवत
बंगाली—सुलफा
मरहटी—भालतसोप
गुजराती—शवनीभाजी
कर्णाटकी—संजमिगे
लैटन—ऐंही गेवी येलेनिम
नैपाली पहाड़ी—सेदमेद

गुण

एकप्रकार का शाक है फूल पीले छत्तरदार होते हैं रंग सब्ज़ हाजमा है पेचश दूर करे सिरदर्द खांसी, दमा, आदि को दूर करे जठराग्नी दीपन करे तप, वात, बलगम और फोड़ा, शूल और योनी शूल को दूर करे नेत्र रोग के लिए भी अच्छा है सुवाद कौड़ा इसके पत्र छोटे २ होते हैं तासीर गर्म खुश्क है

बदला—सोए के बीज

२९ शतावर

नाम	गुण
संस्कृत–शतावरी हिंदी–शतावर तैलंगी–एदूमटी एंगाचल अंग्रेजी–ऐसपेरेगसरेसि मोसम AspAr gus Racemosue फारसी–गुरजदस्ती अरबी–शकाकल मिशरी बंगाली–शतमूली मरहटी–शतावरी गुजराती–शतावरी कर्णाटकी–असडो लैटन–एसपेरेगस नैपाली, पहाड़ी–अंभ दा	शतावर भारी बल देनेवाली आंखों के लिए लाभकारी है, स्तनों में दूध के बढ़ाने वाली वात रक्त पित्त और सोज को दूर करे है ताकत पैदा करे मेधा जिगर व गुरदे को नर्म करे बलगम दूर करे मनी गाढ़ी करे सुजाक व बवासीर को दूर करे ईसकी बेल जंगलों में होती है, बेल का रंग सफेद और पत्र छोटे२ होते हैं बेल के कंडे बहुत होते हैं फूल सफेद और छोटे २ लगते हैं यह सावन में हरी होती

है और फूल लगते हैं तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ७ माशे।

बदला–बैहमन सफेद

शंख पुष्पी (संखाहुली)२०

नाम

संस्कृत—शंखपुष्पी
हिंदी—संखाहुली
पंजाबी—कोडियाली
बंगाली—शंखाहुली
मरहटी—शंखावली
करणाटकी—शंखपुष्पी
गुजराती—शंखावली
लैटन—ईवोलम्यूलस
नैपाली पहाड़ी—शंखपुष्प

गुण

यह एक बूटी है तीक्षण कसैली स्मर्ण शक्ति को बढ़ाने वाली बल देने वाली हाज़मा है मुंह से लार गिरना और ज्वर को दूर करने वाली है उचाक मृगी कुष्ट कृमि आदि को दूर करें है, इस का छत्ता अकसर कर के उपर भूमीमें होता है पत्ते छोटेर धूमर रंग के और फूल दुपेहरीए फूल की तरां लगते हैं फूल तीन प्रकार के होते हैं श्वेत, लाल, और नीले। तासीर गर्म खुशक है ॥

३१ शातला

नाम

हिंदी—शातला
फारसी—एशन
अर्बी—सातर
बंगाली—जिसविशेस
मरहटी—निवंडु गाचरभेद
गुजराती—मावेर
कर्णाटकी—बड़ी लमोतली
लैटन—ओरीगॅन

गुण

शातला पचने में हलका कफ पित्त और लहू के विकार को दूर करे ज़खम फोड़े आदिको हटावे दस्तावर है औरसोज- को दूर करे दिल को फैदा करे कोड़ ववार्मार कृमि और गोले को दूर करे है इस की बेल जंगलों और वनों में होती है पत्ते खैर के पत्तों की तरां छोटे २ फल पीले इन में चपटी फली लगती है और बीच में से काले बीज निकलते हैं इस में से पीले रंग का दूध निकलता है तासीर ठंढी है ॥

सर्द चीनी ३२

नाम

हिंदी—कंकोल, कबाबचीनी
मराठी—कंकोल, कापुर चीनी
गुजराती—चणकबाब
कर्णाटकी—कंकोल इन
तैलंगी—कबाब चीनी
अंग्रेजी—क्युबेबपेपर
Cubeb Pepper
लैटन—क्युबेबा
फारसी—कबाबा-सर्द चीनी
अरबी—कबाब, उरमाद
बंगाली—कांकला
नेपाली, पहाड़ी—ककोला

गुण

सर्द चीनी चर्परी हलकी मुंह की दुर्गंधी को दूर करे कफ, वात और आंखों के रोगों को हटावे हृदय के लिए हितकारी भूख लगावे मंदाग्नि को दूर करे है बड़ी सर्द चीनी के गुणभी बराबर हैं ॥

३३ सुपारी

नाम	गुण
संस्कृत— पूगीफल हिंदी—सुपारी बंगाली—सुपारी कर्णाटकी—अडकेमार अंग्रेजी—बैटल नटपाम Betelnut Palm फारसी—पोपिल अरबी—फोफिल	सुपारी भारी शीतल रूखी कसैली कफ पित्त को दूर करने वाली और मुख की दुर्गंधी को दूर करे, कावज है दस्तों को बंद करे, मनीगाड़ी करे भूखबड़ा वे कची सुपारी• विष की तरां है और सुखी सुपारी अमृत के समान है इस लिए हमेशा सूकी सुपारी खानी चाहीए और पान के विना सुपरी खाने से सूजन औरपांडुरोगहोता है॥ मात्रा ४ मासे

३४ शहतूत

नाम	गुण
संस्कृत—तूत हिंदी—शहतूत मरहटी—तूत गुजराती—तूत अंग्रेजी—मलबेरिफ Mulberies फारसी—शहतूत तुर्श-तूत शीरी अरबी—तूत	पके हुए शहतूत स्वादी ठंडे पित्त और वात को दूर करते हैं, कच्चे शहतूत भारी खट्टे, गर्म होते हैं इसके वृक्ष प्रायः बागों में होते हैं पत्र अंजीर की तरह तीन२ कंगूरे वाले और नीम के पत्तों की तरह चौतर्फी निशान होते हैं यह दो प्रकारके होते हैं एक को काले

शहतूत लगते हैं दूसरे को श्वेत इन के फल फली की तरह होते हैं फली बड़ी नर्म होती है खाने में बहुत स्वादी होती है॥

नाम

संस्कृत—अश्वकर्ण
हिंदी—शाल, सांखु
बंगाली—शालगाछ
मरहटी—रालेचा
कर्णाटकी—सज्जरदामर
तैलंगी—पपचट्ट
अंग्रेजी—सालट्री Sal Tree
लैटन—शोरियारोबस्टा
अरबी—साज

गुण

शाल के वृक्ष बड़े २ होते हैं, पत्र भी बड़े २ होते है शाल के गोंद को राल कहते हैं, शाल कई प्रकार की होती है तासीर गर्म खुश्क है कावज़ है बलगम और जैहर के फसाद को दूर करे है फोड़ा फुंसी और घाट के लिए लाभ कारी है किरम योनी रोग और कान के रोगों को दूर करे है॥

२६ हरीड़

गुण

इसका वृक्ष बड़ा होता है पहाड़ों में पंजाब सरद और कावल में होती है इसके पत्ते अडूसे जैसे होते हैं फूल वारीक आम के बूर जैसे हरीड़ कई प्रकार की होती है फारसी में ३ प्रकार की गिनी जाती है हलेलेजरद, इसका जरद रंग होता है तासीर सर्द खुश्क दमाग, मेधा और सिरको ताकत देती है दस्तावर है खफकान के लियेलाभकारी है दूसरी कालीहरड़ इसका रंग काला होता है लहू साफ करे दस्तावर है बवासीर और तिली को दूर करे। तीसरी काबली हरीड मोहल दिल हैं बलगम सफरा और सौदा को दूर करे मिरगी लकवाके लिए भी लाभकारी है, मात्रा६ माशे। बदला-माजू

नाम

संस्कृत–हारीतकी
हिंदी–हरड़
बंगाली–हरीतकी
गुजराती–हरडे
कर्णाटकी–अणिलेय
तैलंगी–करकांप
अंग्रेजी–मेरोविलेनस
लैटन–टरमिनेलिया
फारसी–हलेलेकलां, जीरेजर्वी असफर हलेलेजरद
अरबी–अहलीलज कावली अहलीज असफरअहलीज अस्वद
नैपाली,पहाड़ी–हला

(३७) हलदी

नाम	गुण
संस्कृत—हरिद्रा हिंदी—हलदी बंगाली—हलुद मरहठी—हलद गुजराती—हलदर करणाटकी—अरशिना तैलंगी—पशप अंग्रेजी—टर्मेरिक Turmeric लैटन—करश्युमालोगा फारसी—ज़रद चोब अरबी—उरुकुसुफर	हलदी, चरपरी, कड़वी देह की कांति को बढाने वाली कफ वात लहू का विकार कोढ, सोज, पांडु रोग पीनस और पित्त का नाश करे खुरक प्रमेह और त्वचा के रोगों को दूर करे अजीर्णता को हटावे है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ५ माशे ॥

नाम

संस्कृत--हिंगु
हिंदी--हींग
बंगाली--हिंग
मराठी--हिंग
गुजराती--वघारनी
करणाटकी--लेसु
तैलंगी--इंगुरा
लैटन--फेरुलानरथिकस
अंग्रेजी--आसाफेटीड़ा
फारसी--अंगेजा
अरबी--हिलतीत
नैपाली पहाड़ी--हिंग्री

गुण

हींग ईरान अथवा पंजाब में होती है दाग और पट्ठों के लिए लाभकारी है मिरगी फालज और रेशा को दूर करे मेदा और जिगर के रोगों को दूर करे आवाज साफ करे उदर रोग शूल, कफ, अफरा वादी, अजीर्ण को दूर करे भूत बाधा को हटावे गोले का नाश करे आंखों के लिए लाभकारी है और खांसी दूर करे इसको हमेशा शुद्ध करके इस्तमाल करो (किसी लोहे के पात्र में घी डालकर बीच हींग डालो और अग्नि पर रखदो जब लाल होजावे तो उतार लो शुद्ध हो जायगी) तासीर गर्म खुश्क है ॥

३९ हारसिंगार

नाम

संस्कृत-पारिजात, नालकुङ्कुम्
हिंदी-हार शिंगार
मरहटी-भाजकत
गुजराती-शियाली
अंग्रेजी-शकेयपर स्टोकर
लैटन-निकटैनथिस

गुण

इसके वृक्ष वनों में होते हैं फूल बड़े सुन्दर और फूल की, डंडी केसरी रंग की होती है डँडी को पीसकर कपड़े रंगते हैं पत्ते इसके खरखरे होते हैं, पुष्टिकारक है इसके पत्तों का लेप दाद के लिये लाभकारी है इसकी छाल पान में रखकर खाने से खांसी दूर होती है, मात्रा ३ माशे ॥

५० हंसपदी

नाम

संस्कृत—हंसपादी
हिंदी—हंसपदी
अंग्रेजी—पैउनहेर
फारसी—परशौशां
अरबी—शारुलजीन
नैपाली पहाड़ी—हंसपात

गुण

एक प्रकार का घास होता है पानी के पास बड़ी ठंडी जगह पर उत्पन्न होता है इसकी जड लाल और कोमल पत्ते हरे और बहुत छोटे होते हैं तासीर मोतदिल है भारी शीतल है लहू विकार अतिसार आदि को दूर करे बलगम, सौदा, सफरा को दस्तों के रास्ते निकाले पेशाब जारी करे तप, दमा, खांसी को दूर करे मात्रा १ तोला ॥

बदला—गुलबनफशा वा मुलठी।

४१ केतकी

नाम

संस्कृत– केतकी
हिंदी–केवड़ा
फारसी–करज
अरबी–कादी
पंजाबी–केवड़ा

गुण

केवड़ा बागों में और जल के निकट अधिक होता है इसके फूलका अर्क निकाला जाता है जो दिल और दिमाग को ताकत देता है गर्मी दूर करता है लहू साफ करे थकावट को हटाए इसका शर्बत चीचक और खसरे के लिए लाभकारी है पीली केतकी आंखों को फायदा करती है॥

बदला–संदल लाल

४२ ककड़ सिंगी

नाम

संस्कृत—कर्कट शृंगी
हिंदी—ककड़ सिंगी
बंगाली—काकड़ा सिंगी
मराठी—काकड़ सिंगी
गुजराती—काकड़ा सिंगी
कर्णाटकी—कर्कट शृंगी
तैलंगी—कर्कट शृंगी
लैटन—पेशंटशिवा

गुण

एक तरह का दरखत का फल है जो बाहिर से सींग की तरां मालूम होता है इस का दरखत केले जैसा होता है, कसैला भारी है वात हिचकी और अतिसार को दूर करे वालों को लाभकारी हैं खांसी दमां लहू का विकारी पित्त, तप, बलगम, किरम और प्यास और अरुची का नाश करे रतूबत दूर करे बच्चों की हिचकी खूनी दस्त पियास और बलगम के फसाद को दूर करे भूख लगावे। तासीर गर्म खुश्क है।

४१ कटेरी

नाम

संस्कृत–कंटकारी
हिंदी–कटेरी भटकटैया
ममोलीयां
पंजाबी-कंडयारी
बंगाली–कंटकारी
मरहटी–रिगणी
गुजराती–वेटी भोरंगणी
कर्णाटकी–नेलगुलु
तैलंगी–रेवटी भलगा
लैटन–सेलेनं
नैपाली पहाड़ी–कंटकारी

गुण

एक प्रकार की घास है छत्ते की तरह पृथ्वी पर बहुत जगह उत्पन्न होती है फूल बैंगनी रंग के और तिरी पीले रंग की होती है पत्ते चितले और कांटेदार होते हैं फल कच्चे हरे और पकने पर पीले हो जाते हैं सफेद फूलों की कटेरी भी इसी तरह की होती हैं चरपरी है अग्नि प्रदीपक कड़वी रूखी पाचक, हलकी है स्वास, खांसी, कफ, वात, तप, पेट के रोग और शूल को नाश करे है श्वेत कटेरी आंखों के लिये लाभकारी है। तासीर गर्म खुश्क है ॥

नाम

संस्कृत--करवीर, श्वेतकरवीर रक्तकरवीर
हिंदी--सफैद कनेर, पीली कनेर लाल कनेर
बंगाली--करवी-लाल करवी
मरहटी--कानैर, पांडरी तांबडी, पिवली
गुजराती--कणेर
कर्णाटकी--चाकणलिंगे
तैलंगी--कनेर चेट्ट
अंग्रेजी--स्वीट सकन्टिड
लैटन- रीयंअोडोरम
फा॰ --खरजेहरा
अ॰ ।--सुमुल, हिमारदकली
नैपाली पहाडी--कलेहरवा

गुण

कनेर सर्व स्थानों पर उत्पन्न होती है इसको लाल, गुलाबी, श्वेत पीले और काले फूल लगते हैं लाल पीले और श्वेत फूल की कनेर बहुत स्थानों पर लगती है इस में विष होता है इसको खाना कभी नहीं चाहिए तासीर गर्म खुश्क हैं। स्वाद कौड़ा कसैला होता हैं श्वेत कनेर प्रमेह, कोढ, फोड़ा और बवासीर को दूर करती है और आंखों के लिये लाभकारी है लाल कनेर का लेप कोढ को दूर करता है, पीली अथवा काली कनेर के गुण भी श्वेत कनेर के सामान हैं मात्रा ५ माशे ॥

नाम

संस्कृत—कृष्णाबीज
हिंदी—कालादाना
बंगाली—नीलकलमी
अंग्रेजी—पेलबलुई पोमिया
लैटन—फार बटिसनील
अरबी—हुबअलनील

गुण

एक मशहूर बीज है रंगकाला तासीर गर्म खुश्क है जमाल गोटे की जगां इस को अधिक इस्तमाल करते हैं, यह जमाल गोटे जैसा तेज़ और दस्तावर नहीं है, कालादाना शरीर को स्वच्छ करे दस्तावर है पेट के रोग, तप, मस्तक के रोग, कोढ आदि को दूर करे और बलगम को दूर करे सुदा खोले पुराने ज़ख्मों के लिए लाभ कारी है दर्द और खारश को दूर करे ॥ मात्रा २ मासे

४६ कुचला

नाम	गुण
संस्कृत—कारस्कर हिंदी—कुचला बंगाली—कुंचिले मरहटी— काजरा गुजराती—झेर कोंचला करनाटकी—कांजिवार तैलंगी—मुंशदि गुंजा अंग्रेज़ी—पाईज़ननट लैटन—सटिरकनाश फारसी—इफ़गाकी अरबी—कातिल अलकरब	एक दरखत के फल का बीज है रंग काला पलतन पर इस के वृक्ष मध्यम आकार के बनों में होते है पते पान के समान और फल नारंगी के समान होते हैं, इनके बीजों को कुचला कहते हैं तासीर गर्म, खुशक है कुचले को शुद्ध किए विना कभी इस्तेमाल नहीं करना चाहिये ॥ कोढ़ लहू का विकार पांडु रोग फोड़ा बवासीर आदि को दूरकरे पट्ठे की बिमारियों के लिए भी लाभ कारी है. पथरी तोड़े इस का लेप दाद और खुर्क को दूर करता है ॥

४७ कमरख

संकृत—करमरंग
हिंदी—कमरख
बंगाली—कामरांगा
मरहटी—करमरे
गुजराती—कमरक खाटा
अंग्रेजी—कैरमबोला
लैटन—एवरहोया

इस का दरखत बहुत सुंदर होता है इस को चार पांच धार वाले फल लगते हैं कच्चे सबज और पकने पर पीले हो जाते हैं तासीर सर्द खुशक है काबज है सफरा की तेजी को दूर करे पियास बुझाए सफरावीके और दस्त बंद करे स्वाद खट्टा होताहै ।

गुण

एक प्रकार का घास है करीब दो गज के लंबाहोता है फूल पीले और पत्ते सबज़ होते हैं तासीर गर्म खुशक है सीने के रोग, बवा सीर सोज और पित्त के लिये लाभकारी है, काबज़ है पेशाब जारी करे इस के बीज ताकत देते हैं, इस की पत्ती कमर दर्द को दूर करती है इस की कली दांत की दर्द हटाती है ॥ कंघी को दूध और मिश्री के साथ खाने से परमेह रोग दूर होता है सुआद खट्टा कौड़ा होता है मात्रा ५ मासे ॥ बदला ऊट कटारा ॥

नाम

संस्कृत—अतिबला
हिंदी—ककहिया
पंजाबी—कंघी
मरहटी—विकंकती
गुजराती—खपाटय
कर्णाटकी—मुलुदुरुवे
अंग्रेजी—इंडियन मेलो
लैटन—इध्युटीलन इंडकम
नैपालीपहाड़ी—अतिबला
फारसी—दरखतशाना
अरबी—मशत अलंगूल

४९ कौंच
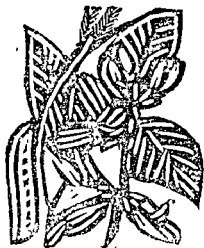
नाम

संस्कृत—कपिकच्छु
हिंदी—कौंच
बंगाली—आलकुशि
मरहटी—कुहिलीचेंबोज
गुजराती—कड़चों
कर्णाटकी—नसुगुन्नी
तैलंगी—पिलिअडुगु
अंग्रेजी—कौहेज़
लैटन—म्युक्युना

गुण

कौंच की बेल होती है फूल सेम की तरां होते हैं फली भी सेमकी तरह होती हैं फलियोंपर लूं होते हैं इसके लूं शरीर पर लगने से खुरक शुरू होजाती है फलियों में से बीज निकलते हैं स्वाद अच्छा होता है मनी उत्पन्नकरता है और गाड़ा करता है वात, कफ और लहू के विकार को दूर करता है सोज को हटावे और इमसाक करे है और ताकत दे है यदि इस का बीज दो टोटे कर के बिच्छू के डंग पर लगायो तो विष दूर हो जाता है मात्रा-६ मासे ॥ बदला-उटंगण बीज ॥

नाम	गुण
संस्कृत—कटुका	एक प्रकार की जड़ है फूल
हिंदी—कुटकी	नीले दो प्रकारके गुच्छों में पत्ते
पंजाबी—कौड़	अंडे के आकार जैसे नीचे का
बंगाली—कुटकी	भाग बड़ा और वगल खंडत होती
मरहटी—कुटकी	है इस की जड़ के अंदर मकड़ी
गुजराती—कडु	के जाले जैसा होता है तासीर
कर्णाटकी—केदार	गर्म खुशक है, श्वेत कुटकी वलगम
तैलंगी—कटकरोहिणी	और सफरा को दस्तों की राह
अंग्रेजी—बलाक हलोबोर	निकाले मेदा साफ करे अधरंग
लैटन—हेलेबोरी	मिरगी और सरसाम को दूर करे
फारसी—खरबके स्याह	दिल को फैदा दे वलगम पित्त,
अरबी—खरबक अस्वदु	तप, प्रमेह, दमा, काम लहू का
खरबक अवीयद	विकार दाद कोढ और किरम

का नाश करे अग्नि दीपक और दस्तावर है। काली कुटकी भी दस्तावर है पुराने नजले को हित कारी है इसको गर्म दूधसे धोकर औषधि में इस्तमाल करनाचाहिए, मात्रा६ रत्ती से ६मासेतक ॥

५२ कमल

नाम	गुण
संस्कृत—पुंडरीक, रक्तपदम नीलपदम पंजाबी—नीलोफर हिंदी—कमल फारसी—नीलोफर, गुलनीलोफर अरबी—गुलनीलोफर करंबुलमा, वरद नीलोफर	कमल ठंडा है देह को सुंदर करे रक्त विकार को दूर कर सुगंधिदायक तप, कफ, पित्त, पियास थकावट आदि को दूर करे नींदलाए गरमी के सिर दर्द को हटाए दस्तों के लिए लाभ कारी है, मूल, नाल, पत्तों सहित

खिड़े कमल को पद्मनी कहते हैं यहठडी है स्तनों को दढकरे कफ पित्त लहू के विकार को दूर करे तासीर ठंडी तर है मात्रा १० मासे

बदला—खतमी

कचूर ५३

नाम	गुण
हिंदी—कचूर, कालीहलदी मराठी—कचेरा, नरकचौरा गुजराती—कचूरी अंग्रेज़ी—लौंग जैडसअरों फारसी—जरंबाद अरबी—एरकुल काफूर	यह झाड़ी की तर्ा उत्पन्न होता है इसके पत्ते हलदी कीतरां होते हैं इस के नीचे गांठ होती है इस गांठ को सुकाते हैं इसी गांठ को कचूर कहते हैं। कचूर कौड़ा चरपरा गरम अग्नि दीपक

सुगन्धित है बवासीर, घाव खांसी, गोला, कफ, ज्वर, तिल्ली आदि रोगों का नाश करे हलका है मुँह साफ करे और दस्तावर है। तासीरगर्म खुश्क है मात्रा ३ मासे॥

नाम

संस्कृत–कुसुम्भ बीज
हिंदी–कुसुम
बंगाली–कुसुम
मराठी–करडींचे
गुजराती–कुसुंबो
कर्णाटकी–कसुंभ
तैलंगी–लनुक
अंग्रेजी–आफिसिनलकारथेमस
लैटन–टिंकटोरीयस
फारसी–गुलेमारकर, तुख़ुम का-यशा
अरबी–अख़रीज हबुलअसफर

गुण

एक प्रकार का मशहूर गजभर लंबा बूटा होता है इसको कंडे लगते है इसके फूलों को कुसुम कहते हैं तासीर गर्म खुश्क है स्वाद तलख होता है मुवाद को पकाये जिगर को ताकत देता है जमे हुए लहू को हरकत देता है बलगम को दूर करता है नींद लाता है। मात्रा ३ माशे है ॥

५६ कुड़ा

नाम

संस्कृत–कुटज
हिंदी–कुड़ा
बंगाली–कुरची
मरहटी–कुडा
गुजराती–कडों
तैलंगी–अंकेलु
अंग्रेजी–अबलतिवड रोजव
अरबी–तिवाज

गुण

कुड़ा चरपरा रुखा कसैला हलका है बवासीर, अतीसार कफ पियास और पित्त को दूर करे तिली को दूर करे अग्नि दीपक और हाजमा है इसके फूल ठंडे होते हैं कफ और कोढ़ को दूर करते हैं इसका बड़ा वृत्त होता है पत्ते राम फल के पत्तों की तरह बड़े होते हैं फूल श्वेत इन में फली आती है श्वेत कुड़े के दूध में विष होता है इसको खाना नहीं चाहिये तासीर गर्म खुश्क है खाना नहीं चाहिये इस की छाल को कुड़ासक कहते हैं सब प्रकार के अतिसार को दूर करे।

५६ कथ

नाम
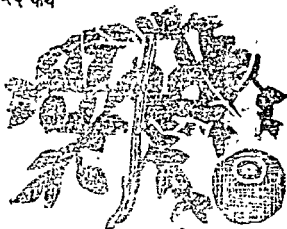
संस्कृत--कपित्थ
हिंदी--कैथ
बंगाली--कयेदगाछ
मराठी--कविठ
गुजराती--कोंट
कर्णाटकी--वेलुल
अंग्रेजी--वुडऐपल ऐलीफैंट ऐपल

गुण

कैथ तमामहिन्दुस्तान में अकसर करके होता है पत्ते इसके चिकने श्वेत और छोटे २ होते हैं इसकी कली वरसात में खिलती है स्वाद इसका खट्टा कसैला होता है खांसी अतीसार वमन पेट के रोग और कफ रोग को दूर करता है इसके फल शीत ऋतु में पक जाते हैं इसके पत्ते वमन, अतीसार और हिचकी को दूर करते हैं कावज है तासीर सर्द खुश्क है ॥
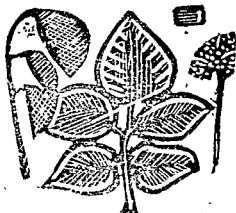
नाम

संस्कत—करंज
हिंदी—करंज
बंगाली—हदर करंज
मराठी—चापड्रा करंज
कर्णाटकी—नापसीयमरनु
अंग्रेजी—समूथ लिवड पोनगेमिया

गुण

करंज के बड़े २ वृक्ष बनों में होते हैं इसके फूल आसमानी रंग के होते हैं और फल भी झुमकेदार नीले रंग के होते हैं पत्तों में दुर्गन्ध आती है करंज छे सात प्रकार का होता है इसके फल हलके गर्म सिर रोग वात, कफ, कोढ, ववासीर और प्रमेहको दूर करते हैं आंखों के लिये लाभकारी हैं योनी दोष गोला पेट के रोग और चमड़े के रोगों को दूर करता है पत्ते दस्तावर होते हैं॥

५७ किकरात

नाम
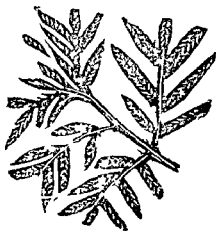
संस्कृत–किकरात रामचचूर
हिंदी–किकरात
मराठी–देवयाभूल
गुजराती–रामयात्रल
फारसी–पचिलान

गुण

किकरात शीतल हलका कौड़ा कफ,' पित्त पियास रक्त विकार सोज वमन और किरम रोग को दूर करे है पियास हराता है, कोढ का नाश करे गरमी को दूर करे तप, वमन और विप को दूर करे है ॥

५६ करोंदा
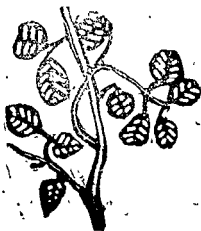
नाम	गुण
संस्कृत--करमर्दक हिंदी--करोंदा बंगाली--करमचा मरहटी--गोडाकरवन्दा गुजराती--करमदी कर्णाटकी--करिजिगे अंग्रेजी--जासमिनफलावर्ड केरिया	इस के वृक्ष अकसर करके बागों में होते हैं पत्ते नींबू जैसे फूल श्वेत और सुगन्धित जूही की तरह होते हैं फलों के गुच्छे बेरी जैसे होते हैं श्वेत और नोक लाल होती है। दूसरे कच्चे आधे सबज आधे लाल होते हैं।

पकने पर काले होते हैं दोनों प्रकार के करोंदे खटे गरम भारी पियास को बुझाने वाले होते हैं पके हुए हलके ठंडे रक्त विकार को दूर करने वाले और दस्तों को बंद करते हैं सूखे करोंदे के गुण पके करोंदे के समान हैं तासीर सर्द खुश्क है ॥

५८ कपास

नाम

संस्कृत—करपासी, कालांजनी
हिंदी—कपास, रुई (बड़ेवें)
बंगाली—करपास
मरहटी—कापशी
अंग्रेजी—काटन
फारसी—कुनुन पंवेदना
अरबी—कुतुहबुल कुतुन

गुण

कपास सारे हिन्दुस्तान में होती है इस के फूल पीले और बीच से लाल होते है इसमें तीन कोने फल लगते हैं इनमें से कपास निकलती है एक काली कपास होती है इसके फूल और बड़ेवे काले होते हैं तासीर गर्म वात को दूर करने वाली है इस के पत्ते लहू और मूत्र को बढ़ाने वाले और कानकी दर्द को दूर करते हैं इसके बीज (बड़ेवें) दूध और वीर्य को बढाते हैं और भारी हैं ॥

६१ करंजुवा

नाम	गुण
संस्कृत— कंटकरंज हिंदी—करंजुवा अंग्रेजी—वौंडकनट फारसी—खाय. इबलीस अरबी—अक्त, मक्त	कौड़ा है प्रमेह, बवासीर. वात और किरम का नाश करे सोज हटावे बगदे लहू को रोके. पुराने तप को हटावे मुवाद को पकावे इसके वृक्ष माली लोग वाड़ी की

जगह लगादेते हैं यह बेल की तरह होता है इसके फलों पर कंडे होते हैं इनमें से चार पांच दाने निकलते हैं इन को करंजुवा कहते हैं गिरी कौड़ी होती है तासीर गर्म खुश्क है ॥

६२ कुलंजन

नाम	गुण
संस्कृत—कुलंजन हिन्दी—कुलीजन अंग्रेजी—ग्रेटर गेलंगल फारसी—खिरदारु अरबी—खोलिंजान	कुलंजन चरपरा कौड़ा अग्नि दीपक स्वर को सुधारे मुख और कंठ को साफ करे कफ, खांसी और वात का नाश करे हाजमा है ताकत देवे कमर दर्द गुर्दा

और फालज के लिए लाभकारी है इसका दरख्त होता है देखने में दाख की वेल की तरह मालूम होता है इसकी जड़ को कुलंजन कहते हैं तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ३ माशे।

बदला—दालचीनी व कबाबा ॥

६३ खसखास

नाम	गुण
संस्कृत—खरबीज हिंदी—खसखास बंगाली—खाकसी अंग्रेजी—पोपिकासीडस फारसी—तुखमे कोकनार अरबी—हबुल कोकनार	खसखास ठंडी है काबज है नींद लाए जोड़ों को सुस्त करे फेफड़े की खुश्की को दूर करे गरम खुष्क खांसी और तपदिक को दूर करे शरीर मोटा करे इसके अधिक सेवन से पुरषत्वा

नष्ट होती है इसका तेल नींद लाता है सिर दर्द को दूर करे दमाग को ताकत दे पोस्त के दानों को खसखास कहते हैं मात्रा ६ माशे ॥

बदला—कद्दू के बीज ।

६४ अर्जुन

नाम	गुण
संस्कृत–अर्जुन हिंदी–कोह, कौह बंगाली–अर्जुनगाछ मरहटी–सारढोल गुजराती–कडायो तैलंगी–मद्दिचेट कर्णाटकी तारेमति	इसके वृक्ष बड़े २ लम्बे और ऊंचे वनों में होते हैं इस के पत्ते लंबे और गोल अनीदार होते हैं इस की छाल श्वेत रंग की होती है और बीच से दूध निकलता है सुआद कसैला है बल देने वाला कफ, पित्त थकावट, पियास प्रमेह दिल के रोग पांडुरोग मेधे का

बढ़ना रक्त विकार पसीना और स्वास रोग का नाश करे इसकी छाल का चूर्ण ताकत देता है और जरयान के लिए लाभकारी है !!

नाम	गुण
संस्कृत–खदिर, श्वेत खदिर हिंदी–खैर, सफेद खैर (कथ्था) बंगाली–खयेर गच्छ मराठी–खैर पांडरा खैर गुजरती–खैरीयो गोर्ड कर्णाटकी–केपिग्रखैर तैलंगी–चंडचेडु	ठंडा है दांतो को मज़बूत करता है कौडा कसैला है खांसी बद हज़मी किरम, प्रमेह, फोड़ा कोड़ रक्त विकार पांडु रोग और कफ को दूर करे है श्वेत खैर कौड़ा कसैला चरपरा कोढ भूत बाधा कफ वात और फोडेको दूर करे इस का गोंद बल देने वाला

वीर्य बढ़ाने वाला मुखरोग कफ और रक्त विकार कोदूर करताहै।

६६ गिलो

नाम

संस्कृत—गुड़ची
हिंदी—गिलोय
बंगाली—गुलंच
मरहटी—गुलवेल
कर्णाटकी—अमृतवल्ली
अंग्रेजी—गुलांचा
फारसी—गिलाई
अरबी—गिलोई
नैपाली पहाड़ी—गडग्र गुरजो

गुण

इस की बेल वृक्षों पर फैल जाती है इस के पत्ते पान के पत्तों के साथ मिलते हैं इस के पत्ते और डंडी काम आती है ॥

गिलो कौड़ी कसैली है ज्वर, पियास वमन वात, प्रमेह, पांडू-रोग को दूर करने वाली है रसायन है ताकत देनेवाली खांसी, कोड़, किरम खूनी ववासीर पित्त और कफ को दूर करती है गिलो का सत स्वादी हलका दीपन नेत्रों के लिए लाभ कारी वीर्य बढ़ाने वाला पांडु रोग तीव्र ज्वर, वमन, ज्वर, कामला - प्रमेह, मदर रोग, आदि को दूर करे गिलो के छोटे २ टुकड़े करके पानी में २ दिन तक भिगोदो फिर छानणी में छानकर रखदो फिर दूसरे दिन उसके ऊपर का पानी बड़ी होशियारी से उतारदो फिर नीचे जो गाढ़ी रह जाय उसको धूप में सुखा लो वही सत बन जाएगा ॥

६७ गजपीपल
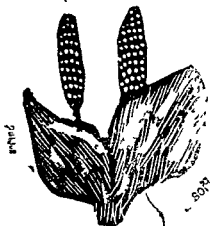
नाम

संस्कृत—गजपीपल
हिंदी—गजपीपल
बंगाली—गजपिपल
गुजराती—गजपीपर
तैलगी—पेदापिपलु

गुण

गजपीपल चरपरी वात कफ का नाश करने वाली अतिसार स्वास रोग, कंठ रोग और किरम का नाश करे स्तन और इंद्री को बढ़ाये है कावज है तेज है हाजमा है इसमाक करे बवासीर और पेट के रोग का नाश करे तासीर गर्म खुश्क है॥

६८ गुलाब--

नाम

संस्कृत—तरुणी, कुवजक
हिंदी—सेवती, कूजा, गुलाब
बंगाली—सेवती गोपाल
मरहटी—गुलाबां चेफूल
अंग्रेजी—कँवज़ रोज
फारसी—गुले गुलसुर्खगुलमुश्क
अरबी—वर्द अह्मर, जरंजवीन मऊल वर्द
नैपाली, पहाड़ी—गुलाप फूल

गुण

गुलाब कसैला है कोढ़ को दूर करे सुगंधित है पित्त और दाह को शान्त करने वाला है दस्त लाए, सिर पीड़ा, गुरदा पीड़ खफकान और गर्मी को दूर करे इसके सूंघने से नजला होता है तासीर ठंडी खुश्क है मात्रा २ तोले बदला—बनफशां ॥

६६ गूलर

नाम	गुण
संस्कृत—उदुंबर हिंदी—गूलर बंगाली—यगडुमुर मरहठी—उंबरो गुजराती—उंबरो अंग्रेजी—कैमटी फारसी—अंजीरेआदम अरबी—जमीज़ नैपाली पहाड़ी—दुवामी, दुमरी	एक फल अंजीर के बराबर होता है, खांसी दर्दसीना वा तिली और लहू के विकार को दूर करे योनी रोगों का नाश करे गर्भ ठहरावे इसकी छाल ठंडी कसैली गर्भ के लिए हितकारी है इसकी लकड़ी की राख आतशक को दूर करे इसके पत्ते पीसकर देने से दस्त बन्द होते हैं। तासीर ठंडी तर है ॥

७० गोखरु

नाम

संस्कृत—गोक्षुर
हिन्दी—गोखरु
पंजाबी—भखड़ा
बंगाली—गोखरी
फारसी—तुखमेखार खसक
अरबी—बजरल खसक

गुण

गोखरु दो प्रकार के होते हैं एक पहाड़ी दूसरा देशी पहाड़ी की झाड़ी होती है फूल पीला और श्वेत होता है पत्ते भी कुछ श्वेत फल चार तुकरे होते हैं ऊपर कोनों पर एक२ कांटा होता है दूसरा देशी गोखरु का छत्ता होता है फूल पीले इसके फल पर छे कांटे होते हैं दोनों प्रकार के गोखरु ठंडे, बलदायक, स्वादी पथरी और प्रमेह रोग का नाश करते हैं गोखरु वीर्य को बढ़ाता है नपुंसकता को दूर करता है पेशाब जारी करे बवासीर और कुष्ट का नाश करे इनमें बड़ा गोखरु अधिक गुणवाला है खांसी और शूलका भी नाश करता है मात्रा ६ माशे। बदला-तुखमखियार॥

७१ गोजीया

नाम

संस्कृत--गोजीहा
हिंदी--गोजिया, गोभी
बंगाली--दाडिशक
मरहटी--पाथरी
गुजराती--भोपाथरी
फारसी--कलमरुमी
अरबी--कंबीत

गुण

गोभी की झाड़ी होती है पत्ते लम्बे और खरखरे होते हैं फूल पीले चक्र की तरह पत्तों में एक वाल निकलती है इस गोभी को शाकवाली ना समझना गोभी वातकारक ठंडी, कफ और पित्त का नाश करने वाली हलकी, प्रमेह, खांसी, रक्तविकार, और तप के दूर करनेवाली है कोमल कसैली है अरुची दूर करती है जरयान और सूजाक को दूर करती है। तासीर ठंडी खुश्क है॥

७२ चंदन

नाम

हिंदी--चंदन, लाल चन्दन
बंगाली--चन्दन, रक्तचन्दन
गुजराती--सुखड, रतांजली
अंग्रेजी--सैंडल वुड, रैडसैंडल वुड
फारसी--संदल सफेद, संदल सुर्ख
अरबी--संदले अबीयद संदले अहमर
पंजाबी--चनन

गुण

चन्दन ठंडा हलका दिलको प्रसन्न करने वाला सुन्दरता के देनेवाला काम को उत्पन्न करने वाला सुगंधित प्यास थकावट मुख रोग और रक्तविकार को दूर करता है खफकान और सफ-रावी दस्तों को बन्द करे इसको घिसाकर इसका लेप सिर पीड़ा को दूर करता है ॥ रक्त चन्दन बड़ा कौड़ा लहू के विकार को दूर करने वाला वात, पित्त, कफ किरम, वमन, और पियास को बुझाता है आंखों के लिए भी लाभकारी है तासीर ठंडी खुश्क ॥

७३ चवेली

नाम	गुण
संस्कृत—उपजाती हिंदी—चमेली बंगाली—चामिली मरहटी—चमेली अंग्रेजी—सपेनिशि, जासमीन फारसी—यासमीन अरबी—यासमन पंजाबी—चंबेली	चमेली की बेल वन बाग और बगीचों में लगाई जाती है इसकी कली लंबी डंडी की होती है फूल का रंग श्वेत और ऊपर से कुछ कलचन पर होता है फूल की सुगंधी बडी मीठी होती है इसका तेल सुगंधी वाला और ठंडा होता चमेली कौडी है घाव, कुष्ट रक्त

विकार शिर के रोग आखो के रोग मुख रोग दात रोग और त्वचा के रोगों को दूर करती है, लकवा अधरंग आदि गंठीए को दूर करता और इसे खुश्क है दर्जा-नरगस वा सोसन ॥

७४ चोवचीनी

नाम

संस्कृत–द्वीपांतरवचा
हिंदी–चोवचीनी
बंगाली–तोपचीनी
अंग्रेजी–चाईनारूट
लैटन–समाईलाकसचाईना
फारसी–एवन
अरबी–एवन
युनानी–खसिलियरआशसनि

गुण

चोवचीनी कड़वी गरम मल मूत्र के शोधने वाली और फिरंग रोग का नाश करने वाली है पुष्टीकारक है वीर्य उत्पन्न करे रसैन है फोड़ा गँडमाल नेत्र रोग रक्त विकार और कुष्ट का नाश करे दुर्बल मनुष्यों को पुष्ट करती है मन्दाग्नी का नाश करे इसके पत्ते असगंध जैसे होते हैं इसका रंग कुछ पीला और श्वेत होता है रस मीठा होता है ॥

नाम

संस्कृत--चित्रका
हिंदी--चीता
पँजाबी--चित्रा',
मरहटी--चित्रक
कर्णाटकी--चित्रमूल
गुजराती--चित्रो
फारसी--बेखबरन्दा।
अरबी--शितरज
अँग्रेजी--पुलँबिगोकोकुलेर्सा

गुण

चीते की झाड़ी होती है इस की कई जात हैं श्वेत फूल का लाल फूल का काले वा पीले फूल का श्वेत फूल का सब जगा होता है अग्नि बढ़ाने वाला पाचक हलका रूखा, गर्म, संग्रहणी, कोढ सोज, ववासीर, किरम खांसी कफ और वात का नाश करे बादी की बवासीर को हटावे लाल चीता देह को मोटा करता है कुष्ट का नाश करता है पारे को बाधे काम में जड और जड़ की छाल आती है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ३ माशे। बदला-नरकचूर वा मजीठ ॥

७७ चाह

नाम

संस्कृत--चाह
हिंदी--चाह
बंगाली--चाह
मरहटी--चहा
गुजराती--चा
अंग्रेजी--टी
फारसी-- चाए खताई

गुण

चाह पहिले चीन आदि देशों से आती थी किन्तु अब भारतके कई देशों में होने लग पड़ी है चाह गर्म , कसैली दीपन करने वाली पाचक, हलकी कफ पित्त का नाश करने वाली है खांसी के लिए भी लाभकारी है कुछ वाईकारक है सुद्दा खोले पसीना लाए और हाज़मा है तासीर गर्म खुश्क है ॥

७७ चिरचिटा
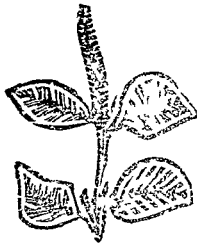
नाम

संस्कृत—अपामार्ग
हिंदी—चिरचिटा
पंजाबी-पुठकंडा
बंगाली—अपाग
मरहठी—अघाडा
अंग्रेजी—रुफचेफट्री
फारसी—नारवासगोना
अरबी—अंकर

गुण

एक मशहूर झाड़ीदार पौदा है जिस पर फूल लाल और पत्ते सब्ज़ आते हैं चिरचिटा दस्तावर है दीपन, चरपरा पाचक है अजीर्णता को दूर करता है, इस की दातन दात दर्द को दूर करती है इस की नसवार सिर के कीड़े मारती है तासीर सर्द खुश्क है ॥

७८ चूका

नाम

संस्कृत—चुक्र
हिंदी—चूका
मरहठी—आंबटचूका
अंग्रेजी—बलैडरडाक
फारसी—तुर्रे खुरासानी
अरबी—बकला हामजा
गुजराती—चूकोखाटी भाजी

गुण

चूके का साग मशहूर है खटी पालक भी कहते हैं गर्म हैं हाजमा है शूल, प्यास वमन को दूर करता है जिगर को ताकत देता है लहू साफ करे बीज इसके बादी और जिगर मेदा और दिल के रोगों को दूर करते हैं। तासीर ठंडी खुश्क है बदला—ज़रिशक वा अनार ॥

७९ बनफशां

नाम

संस्कृत—बनप्सां
हिंदी—बनफशां
बंगाली—बनपसा
मरहटी—बनपसा
फारसी—बनफशां
अरबी—फरफीर

गुण

मशहूर सबजी मायल गाम है पहाड़ी मुलकों में अधिक उत्पन्न होती है फूल श्वेत और नील लगते हैं, तप को दूर करते है लहू के जोश को दूर करे प्यास को बुझाए खांसी व ममाने की सोजश को दूर करे दस्तावर है इस का अधिक इस्तमाल नींद लाता है मात्रा ६ मासे। बदला—नीलोफर वा खुबाज़ी ॥

८० जिमीकन्द
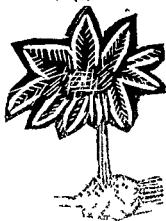
नाम

संस्कृत–शूर्ण
हिंदी–जिमीकंद
बंगाली–ओल
गुजराती–सूर्ण
कर्णाटकी–सुर्ण
फारसी–ज़िमीकंद

गुण

एक दरख्त की जड है जो आलू अरबी की तरां पृथ्वी में उत्पन्न होता है रंग भूरा कुछ लाली पर होता है, हाज़मा है भूख लाता है बलगम के फसाद और पेट दर्द को दुर करता है बादी हटाता है कावज़ है सुदा पैदा करता है दमा खांसी और गोले को हटाता है खुजली पैदा करे है तासीर गर्म खुश्क है ।।

५८ सफेद जीरा

नाम

संस्कृत—सितजीर्क
हिंदी—सफेद जीरा
बंगाली—सदाजीरे
मरहटी—पांढरे जीरे
गुजराती—मादूजीरंग
कर्णाटकी—बिलिबजीरीगे
तैलंगी—जीलकंरर
अंग्रेजी—क्युमिनसीड
फारसी—ज़ीरा सफेद
अरबी—कमून
पंजाबी—चिट्टा जीरा

गुण

एक दरख्त का बीज है, मशहूर है आंखों के लिए लाभकारी है गर्भाशय को शुद्ध करे हाजमा है वात कोढ़ और रक्त विकार को दूर करे अतीसार और गोले का नाश करे मेधा जिगर और आंद्रां को ताकत देता है अफारा दूर करे स्तन में दूध पैदा करता है तासीर गर्म खुश्क है। मात्रा ६ मासे। बदला—जरैया वा काला जीरा॥

८२ जमाल गोटा

नाम

संस्कृत—जयपाल
हिंदी—जमालगोटा
पंजाबी—जञ्गोलोटा
बंगली—जयपाल
कर्णाटकी—जयपाल
अंग्रेजी—पर्जिगक्रोटन
अरबी—हुब अलसलातीन
फारसी—तुखमेबेदंजीर

गुण

एक प्रकार का मशहूर बीज है श्वेत इलाची के बराबर होता है इसका रंग ऊपर से काला और अन्दर मे श्वेत होता है दस्तावर है इसका तेल इंद्री पर लेप करने से ताकत देता है किसी वैद्य हकीम की सलाह बिना इस को इस्तमाल नहीं करना चाहिए और शुद्ध करके काममेंलाना चाहिए पित्त और कफका नाशकरता है इसके शुद्ध करने की विधि-इसके दो टोटे करलो बीच में जो पत्ते की तरह तिरी है उसको निकाल दो इसकी दाल के साथ आठवां भाग सुहागे का चूर्ण मिलाओ और केसयंत्र की भावना दो फिर दूध में पकावो ऐसे ही तीन बार करो। तासीर गर्म खुश्क है !!

८३ जायफल

नाम

संस्कृत—जातीफल
हिंदी—जायफल
बंगाली—जायफल
मरहटी—जायफल
करर्णाटकी—जाईफल
अंग्रजी—नटमेग
फारसी—जौज़बोवा
अरबी—जौज़ उलतीब
पंजाबी—जैफल

गुण

एक दरखत का फल है जो जामं जितना होता है रंग भूरा होता है यह टापुओं में उत्पन्न होता है गंठीए को दूर करे लकवे अधरंग के लिए लाभकारी है दुर्गन्धी, कफ, वात, किरम, वमन, खांसी और दिलकी बीमारियों को दूर करता है तासीर गर्म खुश्क है। चिकना और भारी जैफल अच्छा होता है॥

८४ तबाशीर

गुण

यह एक रतूबत है जो एक प्रकार के बांस से निकलती है इसका रंग सफेद कुछ नीलेपन पर होता है काबज है पियास को बुझावे जिगर मेदा वा दिल को ताकत देती है मुंह के दांतों को अच्छा करती है वीर्य को बढाती है पित्त, दाह, अजीर्ण, खांसी, दमा पियास पांडु, कोढ, कफ और रक्त विकार को दूर करती है स्वाद फीका होता है तासीर सर्द खुश्क है ॥

नाम

संस्कृत--तवखवीर
हिंदी--तवाखीर
बंगाली--तवखवीर
मराठी--तवकील
गुजराती--तवखीर
अंग्रेजी-अरारोट
कर्णाटकी--तवखवीर
फारसी--तवाशीर-वंसलोचन

८५ तालमखाना

नाम
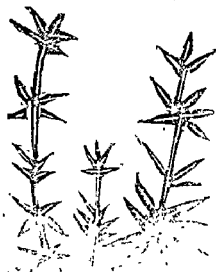
संस्कृत—कोकिलाखय
हिंदी—तालमखाना
मरहठी—चिखरा
गुजराती—एखरो
कर्णाटकी—कुलुगोलिके
तैलंगी—गोभी
अंग्रेजी—ल.गलियङ्गारलेरीया

गुण

एक गज़भर लम्बे घास का बीज है जो पानी के पास उत्पन्न होता है पत्ते लम्बे होते हैं इसको गंडा लगती है उन गंडों से बीज निकलता है इनको तालम खाना कहते हैं शरीर को मोटा करता है ताकत देता है मनी बढ़ाता है रक्तविकार को दूर करता है इमसाक करता है पियास, सोज, दाह और पित्त को दूर करता है गर्भ ठहराता है मात्रा ६ माशा ।
बदला-सालब मिश्री ॥

८६ दा

नाम

संस्कृत—दालचीनी
हिन्दी—दालचीनी
बंगाली—दाड़चीनी
मरहटी—दालचीनी
गुजराती—दालचीनी
फारसी—दारचीनी

गुण

एक दरखत की छाल है रंग लाली पर और स्वाद कुछ मिठास पर होता है इसके पत्ते तमाल पत्र जैसे होते हैं डंडी ऊपर श्वेत फूल लगते हैं स्वादी है कौडी है वात पित्त को दूर करती है शरीर को सुंदर करती है पियास बुझाए मुहकी गलाजत दूर करे वीर्य बढावे इसका तेल सिरदर्द और मेदे की दर्द को दूर करता है तासीर गर्म खुश्क है। मात्रा ६ माशे। बदल—कबाबा वा तज॥
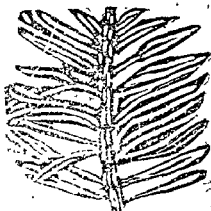
८७ तालीस पत्र

नाम.

संस्कृत—तालिशपत्र
हिंदी—तालीस पत्र
बंगाली—तालीश पत्र
मरहटी—लघुतालीस पत्र
कर्णाटकी—तालीसपत्र
तैलंगी—तालीश पत्र
गुजराती—तालीस पत्र
फ़ारसी-ज़रंब
अरबी-तालीमफ़र

गुण.

एक मशहूर घास है रंग पलतन पर होता है और कुछ लाली वा कलतन पर होता है भूख लगाए हाजमा है मेदा और जिगर को ताकत देता है खांसी, दमा, बलगम, हिचकी को दूर करता है आवाज साफ करता है वाई और गोले को दूर करता है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ३ माशे। बदला—जीरा ॥

८८ थोहर

नाम
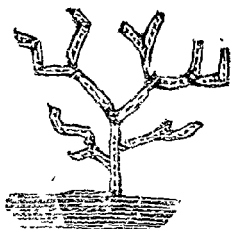
संस्कृत—स्नुरी
हिंदी—थोहर
बंगाली—सिजवृत्त
गुजराती—कंटालोपारे
अंग्रेजी—मिलकसहेज
अरबी—ज़ुकुम-हज़ाज़ी
फारसी—लादनाम्
नैपाली, पहाड़ी—दुर्गसिखरह

गुण

मवज़ रंग का एक मशहूर दरख्त है पत्ते नर्म होते हैं इसकी हर एक शाख से दूध निकलता है पित्त दाह और कोड़ को दूर करता है दस्तावर है प्रमेह का नाश करे है इस के दूध के साथ पेट के रोग दूर होते हैं, लेकन जैहरीला है सोच समझ कर बरतना चाहिए—तासीर गर्म खुष्क है॥

८९ तिल

नाम

संस्कृत—तिल
हिंदी—तिल, तिली
बंगाली—तिलगाच्छ
मरहटी—तिल
गुजराती—तिल
कर्णाटकी—एलु
अंग्रेज़ी—सिसेम नाईजरसीड
फारसी—कुंजद
अरबी—सिशिम

गुण

एक बारीक फल है जो फली के अंदर होता है ऊपर से काला अंदर से श्वेत होता है शरीर को मोटा करता है स्तनों में दूध पैदा करता है मनी पैदा करता है मुंह की छाईयों को दूर करता है बुद्धि बढ़ाता है इस की खल कफ, वात और प्रमेह को दूर करती है ताकत देती है तासीर गर्म तर है ॥

दाख, अंगूर ६०

नाम

संस्कृत—द्राक्षा
हिंदी—दाख अंगूर
बंगाली—किसमिस
मरहटी—द्राक्ष
गुजराती—द्राख
तैलंगी—द्राक्षा
फारसी—अंगूर
अरबी—इसबरम
अंग्रेजी—ग्रेप

गुण

यह हिंदुस्तान का एक मशहूर मेवा है अधिकतर काबुल कोटा आदि देशों में होता है और कई प्रकार का होता है फल गुच्छों में लगते हैं बड़ा स्वादी मेवा है लहू पैदा करता है कुछ दस्तावर है आखों को फैदा देता है मनी को बड़ाता है कफ करता है ॥ कच्ची दाख खट्टी और भारी होती है ॥

६१ जम्मूं

नाम

संस्कृत–जंबू
हिंदी–जामुन
बंगाली–जामगाच्छ
मरहटी–जाबुल
कर्णाटकी–निरलू
अंग्रेजी–जांमबरदी

गुण

एक मशहूर फल है रंग काला और ऊदा होता है दिल और जिगर को ताकत देता है सुद्दा खोलता है रतूबत खुश्क करता है हाजमा है दस्त बन्द करता है गर्म मजाज वालों के मेधे और जिगर को ताकत देता है सफरावी लहू के जोश को दूर करता है इसका सिरका तिल्ली को दूर करता है और हाजमा है ।

६२ पूदना

नाम

हिंदी–पोदीना
पंजाबी–पूदना
बंगाली–पुदिना
मरहटी–पुदिना
गुजराती–पोदिनो
अंग्रेजी–टोलरैडमैंट
फारसी–खुद नजहीक
अरबी–फोतीज

गुण

पूदना मशहूर है दो प्रकार का होता है एक देशी एक पहाड़ी इसका अर्क कई रोगों को दूर करता है हाजमा है पूदना स्वादी होता है भूख बढाता है कफ, खांसी, संग्रहणी अतीसार और किरम रोग को दूर करता है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ६ माशे

९३ दुपैहरिया फूल

नाम

संस्कृत—बंधूर
हिंदी—दुपैहरिया, गेजुनिया
बंगाली—बांधुलि, फुलेरगाछ
मरहटी—दुपारीचेंफूल
गुजराती—बपुरियो
कर्णाटकी—बंदूरो
लैटन—परोट पिटस

गुण

यह अकसर बागों में होता है फूल तीन चार प्रकार के होतेहैं- श्वेत, लाल, संधूरी इसके फूल दुपैहर के समय फूलते हैं बलगम करता है तप को दूर करता है वात पित्त और भूत बाधा को दूर करता है तासीर गर्म है ॥

६४ देवदाल

नाम
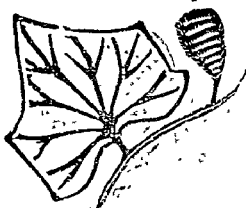
संस्कृत—देवदाल
हिंदी—सोनीया
पंजाबी—घगरबेल
बंगाली—घोखक
मरहट्टी—देवदाली
गुजराती—कुकुड बेल
कर्णाटकी—देवडंग
अंग्रेजी—ब्रिसटल लघूफा

गुण

इसकी बेल बहुत बड़ी होती है किसान लोग इसकी बेल खेती की वाड़ी पर लगा छोड़ते हैं इसके फूल श्वेत, लाल, और पीले होते हैं फलों के ऊपर छोटे २ कांटे होते हैं कफ, स्वास बवासीर, पांडु, किरम, हिचकी, तप, सोज, भूत बाधा और खांसी आदि को दूर करे है। तासीर गर्म है ॥

नाम	गुण
संस्कृत–धुस्तर हिंदी–धतूरा बंगाली–धुतुरा मरहटी–धोतरा गुजराती–धतुरो कर्णाटकी–मडकुलिके अंग्रेजी- थोरन आपल अरबी–जोज़म सील, जोज़मासम फारसी–अस्तरलूनीया सालुना	एक दरखत का फल है खार-दार होता है चमड़े के रोगों को दूर करता है फोड़ा किरम को हटाता है और ज़हरीला होता है बवासीर को दूर करे दमाग सुस्त करता है नशा लाता है नींद लाए कोढ़ का नाश करे तासीर गर्म खुश्क है मात्रा १ रत्ती ॥

९४ देवदाल

नाम

संस्कृत–देवदाल
हिंदी–सोनीया
पंजाबी–घगरवेल
बंगाली–घोखक
मरहटी–देवदाली
गुजराती–कुकुड वेल
कर्णाटकी–देवडंग
अंग्रेजी–ब्रिसटल लयूफा

गुण

इसकी बेल बहुत बड़ी होती है किसान लोग इसकी बेल खेती की वाड़ी पर लगा छोड़ते हैं इसके फूल श्वेत, लाल, और पीले होते हैं फलों के ऊपर छोटे २ काटे होते हैं कफ, स्वास बवासीर, पांडु, किरम, हिचकी, तप, सोज, भूत बाधा और खांसी आदि को दूर करे है। तासीर गर्म है॥

नाम	गुण
संस्कृत—धुस्तर हिंदी—धतूरा बंगाली—धुतुरा मरहटी—धोतरा गुजराती—धंतुरो कर्णाटकी—मदकुलिके अंग्रेजी—थोरन आपल अरबी—जोज़म सील, जोज़मासम फारसी—अस्वरलूनीया सालुना	एक दरखत का फल है खार-दार होता है चमड़े के रोगों को दूर करता है फोड़ा किरम को हटाता है और ज़ैहरीला होता है बवासीर को दूर करे दमाग सुस्त करता है नशा लाता है नींद लाए कोढ का नाश करे तासीर गर्म खुश्क है मात्रा १ रत्ती॥

१८—नागरमोथा
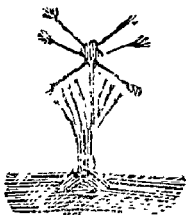
नाम

संस्कृत--मोथा
हिंदी—मोथा, नागर मोथा
फारसी—मुश्कज़र्मान
अरबी—शादकफी

गुण

एक खुशबूदार गोल या लंबी जड़ है मेधे को ताकत देती है हाज़मा है चेहरे के रंग को साफ करता है बुद्धि बढाए पथरी तोड़े है दांतों को मजबूत करे पियास दाह और थकावट को दूर करे पेशाब लाए रक्तबिकार को दूर करे तासीर गर्म खुश्क है॥
मात्रा ४ माशे॥

६६ निर्गुंडी

नाम

संस्कृत—निर्गुंडी

हिंदी—संभालू; संभालू के बीज

पंजाबी—वणा। लहरी

अंग्रेज़ी—काईबलिवढ चेसट्री

फारसी—तुखम अलंजुशक्त

अरबी—बजरुलअसक

गुण

संभालू मशहूर दरख्त है इसके बीज काले वा सफेद रंग के होते हैं दमाग और जिगर के सुद्दे को खोलते हैं स्मर्णशक्ति बढ़ाते हैं बालों को सुन्दर करते हैं आंखों के लिए लाभकारी हैं शूल; सोज, किर्म कोढ और तप; को दूर करते हैं तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ३ माशे।

बदला—गुलनार
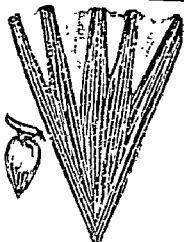
नाम

संस्कृत—नारकेल
हिंदी—नारीयल, खोपा
बंगाली—नारकोल
मरहटी—श्रीफल
गुजराती—नालीयर
अंग्रेजी—कोकोनटपाम
फारसी—नारगेल
अरबी—नारजिल

गुण

एक मशहूर फल है इसका बड़ा दरख्त लम्बा सीधा होता है वीर्य को बढ़ाये लहू पैदा करे शरीर मोटा करे माली खौलिया और जिगर की नाताक्ती के लिए लाभकारी है हर रोज़ निरहार खाने से आंखों की रोशनी को बढाता है इसके तेल की मालश शरीर और बालों को नर्म करती है तासीर गर्म खुश्क है ॥

मात्रा १ तोला

बदला—पिस्ता, बादाम, चहलगोजा

१०१ निसोत
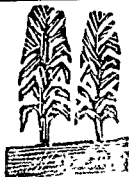
१०२ नीवार

नाम

संस्कृत–तरीवरत
हिंदी–निसोत
अंग्रेजी–बड़लीथरूट
फारसी–नसोत
अरबी–तुरबुद
पंजाबी–तिरवी

गुण

एक जड़ है कलतनी रंग की जो अन्दर से भूरी और हलके रंग की सफेद निकलती है बलगम को दस्तों की राह निकाले फालज पठयां की बिमारी और सीने की दर्द को दूर करती है और जुलाब वास्ते उमदा चीज है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ५ माशे बदला–कालादाना ॥

नाम

संस्कृत–नीवार
हिंदी–तिर्ला, तिनी
मरहटी–देवाभात
गुजराती–वंटी
बंगाली–उड़ीधान

गुण

इसका दरखत बहुत ऊंचा नहीं होता वादी है ठंडा है बलगम को बढ़ाती है जिगर की गर्मी दूर करती है हलकी है वाई पैदा करती है तासीर ठंडी है ॥

नाम

संस्कृत--निंब
हिंदी–नीम
पंजाबी–निम
बंगाली–निमगाछ
मरहटी--कडुनिमडो
गुजरावी–लिंबड़ो
अंग्रजी–निंबट्री
फारसी–नींव

गुण

एक मशहूर दरखत है आंख की रोशनी को बढाती है फोड़ेको शोधती है किरम कुष्ट फोड़ा गरमी, विप, वात खांसी, वर, पियास रक्त विकार और प्रमेहका नाश करे इसके पत्ते आंखों को लाभकारी हैं और फोडे को दूर करते हैं इसकी दातन दांतों को पुख्ता करती है और साफ करती है। मात्रा १ तोला तासीर सर्द खुश्क है॥

१०४ निंबू

नाम

संस्कृत—निंबुकं, जवीर
हिंदी—निंबु, कागज़ी निंबु
बंगाली—कागजी लेंबु
मरहटी—कागदी लिंबु
गुजराती—कागदी लिंब
अंग्रेज़ी—लैमनज़
फारसी—लिमुनेतुर्श लिमुने शीरीं
अरबी—लिमुने हाजिम

गुण

एक मशहूर फल है जिस का रस खट्टा होता है इसकी बहुत किस्में होती है हलका है पाचक है पेट के रोग दूर करता है वात पित्त कफ और शूल के लिए लाभकारी है भोजन को पचाता है मदाग्नी विशूचका गोला और किरम का नाश करे तासीर सद खुश्क है।

१०५ परपटी

नाम

संस्कृत—परपटी
हिंदी—पनड़ी
कर्णाटकी—वेमनलिके
तैलंगी—पकेमुक

गुण

परपटी कसैली है लहू के विकार को दूर कर पियास बुझावे कोढ़ खुरक फोड़ों को दूर करे तासीर ठंडी है यह हिंदुस्तान में ही होता है।

१०६ पालक

नाम

हिंदी—पालक
अंग्रेजी—सपाईनेज
फारसी—इसपानाख
अरबी—सोनाफपूस

गुण

एक मशहूर साग है लहू के विकार को दूर करे कुछ दस्तावर है कफकारी गर्मी का नाश करे तबीयतनर्म करे हजम जल्दी होता है तप को दूर करे गुरदे मसाने की पथरी तोड़े है पेशाब खोले तासीर ठंडी तर है।
बदला-खुरफा या कद्दू ॥

१०८ पाढ़

नाम

संस्कृत—पाठा
हिंदी—पाढ़
बंगाली—निमुक
मरहठी—पहाड़मूल
गुजराती—कालीपाट
कर्णाटकी—पारा
अंग्रेजी परेरारूट

गुण

एक प्रकार की बेल होती है पत्ते गोल होते हैं फूल श्वेत छोटे २ होते हैं फल लाल होते हैं बलगम दूर करे शूल सब वमन कोढ अतिसार दिल के रोग किरम पेट के रोग और फोड़े को दूर करे टूटी जगह को जोड़े तासीर गर्म है।

१०८ पिठवन

नाम

संस्कृत—पृष्टपर्णी
हिंदी—पिठवन, पिठोनी
बँगाली—चाकुले
मरहटी—पीठवण
गुजराती—पृष्टपर्णी
करणाटकी—तोरेमोत्र
तैलंगी—कपेला कुप्पन
फारसी—भनून

गुण

एक औषधी है जो मेवे की तरह होती है फल गोल नीले रंग के होते हैं। तप, पियास, वमन, खांसी मरोड़ और फोड़े को दूर करे लहू के अतिसार को दूर कर तासीर गर्म है ॥
मात्रा २ माशे ॥

पीपल

नाम
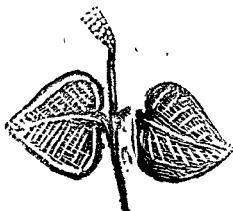
संस्कृत—पिप्पली
हिंदी—पीपल
पंजाबी—मघां
बंगाली—पिपुली
मरहटी—पिप्पल
गुजराती—लिंडी पीपल
कर्णाटकी—हिप्पली
अंग्रेजी—लांग पीपर
फारसी—फिल २ दराज
अरबी—दारफिलफिल

गुण

इसकी बेल जंगवार और मगध देश में अधिक होती है पत्ते पान जैसे होते हैं फली काली सख्त और लंबी होती हैं अग्नि को बढ़ावे वीर्य पैदा करे हाजमा है वात कफ का नाश करे हलकी है दस्तावर है स्वास पेट के रोग कोढ प्रमेह बवासीर और शूल का नाश करे पाक में स्वादी है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा तीन माशे ।

बदला—सुंठ वा कचूर

१०८ पिठवन

नाम

संस्कृत—पृष्टपर्णी
हिंदी—पिटवन, पिठौनी
बँगाली—चाकुले
मरहटी—पीटवण
गुजराती—पृष्टपर्णी
करणाटकी—तोरेमोत्र
तैलंगी—कथेला कुप्पन
फ़ारसी—भनून

गुण

एक औषधी है जो मेवे की तरह होती है फल गोल नीले रंग के होते हैं। तप, पियास, वमन, खांसी मरोड़ और फोड़े को दूर करे लहू के अतिसार को दूर कर तासीर गर्म है ॥
मात्रा २ माशे ॥

पीपल

नाम

संस्कृत—पिप्पली
हिंदी—पीपल
पंजाबी—मघां
बंगाली—पिपुली
मरहटी—पिप्पल
गुजराती—लिंडी पीपल
कर्णाटकी—हिप्पली
अंग्रेजी—लांग पीपर
फारसी—फिल २ दराज
अरबी—दारफिलफिल

गुण
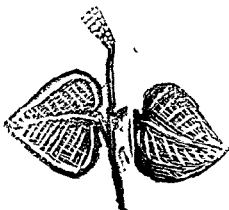
इसकी बेल जंगआर और मगध देश में अधिक होती है पत्ते पान जैसे होते हैं फली काली सख्त और लंबी होती हैं अग्नि को बढावे वीर्य पैदा करे हाजमा है वात कफ का नाश करे हलकी है दस्तावर है स्वास पेट के रोग कोढ ममेह बवासीर और शूल का नाश करे पाक में स्वादी है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा तीन माशे।

बदला—सुंठ वा कचूर

११० पुनर्नवा

नाम

संस्कृत—पुनर्नवा
हिंदी—विशखपरा
बंगाली—पुन्या
कर्णाटकी—चल्डकिल
अंग्रेजी—सपरेडिंग होगविड
अरबी—हंदकूकी
फारसी—सपरेहोग

गुण

यह तीन प्रकार का होता है श्वेत, लाल और नीला ।। श्वेत पुनर्नवा लहू के विकार को दूर करे पांडु रोग, सोज खांसी दिल के रोग वात कफ और उदर रोग को दूर करे। लाल पुनर्नवा हलका कफ पित्त और लहू के विकार को दूर करता है। नीला-दिल के रोग पांडु, सोज वात और कफ को दूर करे है ।। तासीर-श्वेत की गर्म, लाल की ठंडी, और नीले की गर्म है ।।

१११ पोई

नाम

संस्कृत–पोदकी
हिंदी–पोई का साग
बंगाली–पुईशाक
मरहटी–अयालू
गुजराती–पोधी
अंग्रेजी–रैडमलबारनेड
लैटन–बसेला रुवा

गुण

पोई की बेल सब जगह होती है पत्ते गोल पान के पत्ते के बराबर होते हैं रंग श्वेत और लाली पर होता है पोई का साग वात पित्त को दूर करने वाला आलस बढाने वाला और कफकारी है वीर्य बढावे भूख और नींद लाए ताक़त दे इसका लेप इन्द्री पर करने से इमसाक होता है तासीर ठंडी तर है ॥

११० पुनर्नवा

नाम
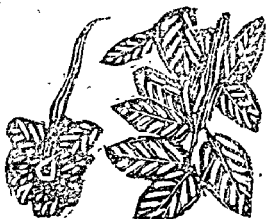
संस्कृत—पुनर्नवा
हिंदी—विशखपरा
बंगाली—पुन्या
कर्णाटकी—बलडकिल
अंग्रेजी—सपरेडिंग होगविड
अरबी—हंदक़ूकी
फारसी—सपरेहोग

गुण

यह तीन प्रकार का होता है श्वेत, लाल और नीला।। श्वेत पुनर्नवा लहू के विकार को दूर करे पांडु रोग, सोज खांसी दिल के रोग वात कफ और उदर रोग को दूर करे। लाल पुनर्नवा हलका कफ पित्त और लहू के विकार को दूर करता है। नीला-दिल के रोग पांडु, सोज वात और कफ को दूर करे है।। तासीर-श्वेत की गर्म, लाल की ठंडी, और नील की गर्म है।।

११३ फालसा

नाम	गुण
संस्कृत-परुषक हिंदी—फालसा बंगाली-फालसा कर्णाटकी-पुट्रिकी गुजराती—धरामण अंग्रेजी-एश्याटिकग्रेविया फारसी-पालसा अरबी-फालसा	फालसे के दरख्त प्रायः बाग बगीचों में होते हैं पत्ते बेल की तह तीन २ जुड़े रहते हैं फल दो २ तीन २ इकट्ठे होते हैं कच्चा फालसा कसैला खट्टा गर्म वात को दूर करने वाला है, पक्का फालसा स्वादी खट्टा पाचक दिल को ताकत देने वाला लहू

के विकार को दूर करने वाला है गरमी के दस्त कै, हिचकी बुखार की गरमी को दूर करे पेशाब की गरमी और सुजाक को दूर करे इस की छाल, प्रमेह, योनीदाह, मूत्र रोग और वाई को दूर करे तासीर ठंडी खुश्क है॥

११२ पोस्त

नाम

संस्कृत—खसफल
हिंदी—पोस्त
बंगाली—खाकसी
मरहटी—पोस्त
गुजराती—अफीखनाडोदावा
अंग्रेजी—पोपिकाप स्युलस
फारसी—कोकनार
अरबी—अंबाम

गुण

यह खसखास के फल का छिल का होता है जब यह कच्चा होता है तो इस में सूईएं चोभकर दूध निकालते हैं जो सूख कर अफीम बन जाता है।' पोस्त दस्तों को बंद करता है नशा लाता है कावज़ है वाई करे बलगम को दूर करे जोड़ों को सुस्त करे खूनी और सफरावी दस्तों को बंद करे नींद लाए और खांसी दूर करे है ॥ इसके बहुत सेवन से पुरुषत्वा नाश होती है तासीर ठंडी खुश्क है मात्रा ६ मासे ॥

११६ बादाम

नाम
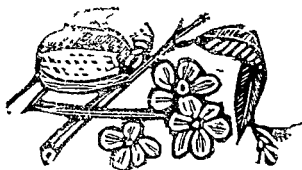
संस्कृत—वाताद
हिंदी—बादाम
बंगाली—बादाम
अंग्रेजी—स्वीट अलमण्ड
अरबी—सोजलहुल, सोजलमुर
फारसी—बादाम शीरीं, बादाम तलख

गुण

एक मशहूर मेवा है जिसका छिलका ऊपर से सख्त होता है इसके बड़े २ दरख्त काबुल आदि मुल्कों में होते हैं पत्ते इसके लम्बे और गोल होते हैं मीठा बादाम दिमाग को ताकत देता है तबियत नर्म करे मनी पैदा करे है शरीर मोटा करे है, कोड़ा बादाम साज को दूर करे सीने और फफड़े की सोज को दूर करे सरद खुश्क खांसी को दूर करे पथरी तोड़े है बादाम का तेल (बादामरोगन) मस्तक रोगों को दूर करे और ताकत देता है। बदला—चलगोजा ॥

१९४ बबूर

नाम

हिंदी–बबूर
पंजाबी -किकर
अंग्रेजी–ऐकरयाटी
फारसी–मुगिलां
अरबी–अमुगिलां

गुण

एक मशहूर कांटेदार दरख्त है खांसी, कफ, लहू का विकार और बवासीर को दूर करे अति सार और प्रमेह को दूर करे कब्ज है इसकी गोंद गर्मी और वात का नाश करे है तासीर ठंडी खुश्क है। बदला-पलाश

१९५ बहेड़ा
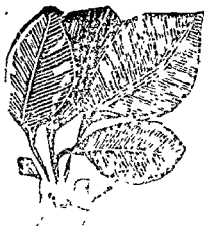
नाम

संस्कृत–विभीतक
हिंदी–बहेड़ा
अंग्रेजी–मैरोबेलन
फारसी--बलेला
अरबी–बलेलज

गुण

बहेड़ा कब्ज है हलका है कफ लहू का विकार खांसी और कोढ़ का नाश करे बालों को बढ़ाए मेदे को ताकत देता है भूख लाए पुराने दस्त बवासीर आंख और दिमाग को फायदा करता और ठंडी खुश्क है। मात्रा २ मासे बदला हरीतकी।

१२०. ब्रह्मी

नाम

संस्कृत—ब्रह्मी
हिंदी—ब्रह्मीचरेली
मरहटी—ब्रह्मी
गुजराती—ब्राह्मी
बंगाली—ब्रह्मीशाक
कर्णाटकी—ओंदेलग
तैलंगी—संब्रनीचेट्ट
अंग्रेजी—इंडीयन पेनीवर्ट
फारसी—जरनव

गुण

एक प्रकार की झाड़ी है जो हिंदुस्तान में उत्पन्न होती है और छत्ते की तरह पानी के पास होती है पत्ते छोटे २ और गोल एक तरफ से खुले होते हैं। ब्रह्मी बुद्धि बढ़ाने वाली उमर बढ़ाए है कफ को शोधे दिल को फैदा दे स्मर्णशक्ति बढ़ाए पांडु रोग खांसी सोज, तप, कफ और वात को दूर करे। तासीर ठंडी खुश्क है।

११६ बावची

नाम	गुण
संस्कृत—बाकुची हिंदी—बावची मरहटी—बावची गुजराती—बावची कर्णाटकी—बदचिगे तैलंगी—विपंतोगे अंग्रेजी—ऐसकयूलंटफला कुफ-रसीया बंगाली—हाकच	इसके फूल काले रंग के होते हैं, फल गुच्छों में होते हैं इस में से बीज निकलते हैं जो गोल और चपटे होते हैं ताकत दे कफ, कोढ़, स्वास, खांसी, और खुश्क को दूर करे श्वेत और काले दाग और रक्त विकार को, दूर करे फोड़ा चमड़े के रोग और किरम का नाश करे तासीर गर्म खुश्क है। मात्रा १॥ माशा ॥

१२२ मको

नाम

संस्कृत—काकमाची
हिंदी—मको
बंगाली—मदन
मरहटी—कामोनी
गुजराती—पीलुडी
कर्णाटकी—कावईकाक
अंग्रेजी—नाईटसेड
फारसी—रुबाह तरीफ
अरबी—अजअल सलब

गुण

एक मशहूर साग है। फल गोल लाल और सबज़ रंग का होता है। पत्ते गोल और लंबे होते हैं। मको दस्तावर है आवासको साफ करे सोज, तप, कोढ़, बवासीर, प्रमेह, हिचकी और दिलके रोगों को दूर करती है सोज और तप कोढ़ दूर करे तासीर मोहद्दिल है।

मात्रा ६ मासे

१२१ ब्रह्मदंडी

नाम

संस्कृत—ब्रह्मदंडी
हिंदी—ऊटकटारा
पंजाबी—ऊटकटारा
बंगाली—छागलदांडी
मरहटी—ब्रह्मदण्डी
गुजराती—तलकंटो
कर्णाटकी—ब्रह्मदण्डी
अंग्रेजी—थिस्टल

गुण

एक मशहूर हिंदी घास है जिसका रंग सब्ज़ पलतन पर होता है। लहू साफ करे दिमाग को ताकतदे वात और सोज को हटाए इस के चूर्ण को पानी में मिलाकर चेहरे पर लेप करने से चेहरे का रंग साफ होता है और छाइयां दूर करती है तासीर ठंडी खुश्क है॥

१२५ मर्सा

नाम

संस्कृत—काकजंघा
हिंदी—काकजंघा, मर्सा
बंगाली—कांटा गुड काडजी
मरहटी—कागचे झाड़
गुजराती—अघोड़ी
कर्णाटकी—जीरचिलेच
तैलंगी—नाला दुचीर्णाके
लैटन—हैपलेथिस

गुण

इस की झाडी जंगलों में होती है इस के पत्ते लंबे २ खुरदरे हैं और वरीक फूल छोटे २ होते है तरको दूर करे कीड़ों को मारे आंखों की ज्योति बढ़ाए कफ, पित्त, घाव, अजीर्णता को दूर करे इस की दातुन दांतों को मजबूत करती है तासीर ठंडी है ॥

१२३ मजीठ

नाम

संस्कृत—मंजिष्टका,
हिंदी—मजीठ
बंगाली—मंजिष्ठा
मरहटी—मंजिष्ट
गुजराती—मजीठ
कर्णाटकी—मंजिष्ठा
अंग्रेजी—मेडररूट
फारसी—रूनास
अरबी—फुवरतु

गुण

एक प्रकार की जड़ है जो लाल कलतनी रंग की होती है मेदे को ताकत देती है सुद्दा खोलती है वर्ण को सुन्दर करती है प्रमेह, वात, कफ, नेत्र रोग, सोज य.नीदोश शूल कान के रोग, कोढ़, बवासीर कृमी और रक्त विकार को दूर करती है तासीर गर्म खुश्क है ॥

१२६ मिर्च काली

नाम

संस्कृत-मरिच
हिंदी-काली मिर्च
बंगाली-मरिच
मरहटी-मिरें
गुजराती-मारे
तेलंगी-मेणसु
अंग्रेजी-ब्लैकपेपर
फारसी-फिलफिल
अरबी-फिलफिल अबीयद

गुण

इस के छोटे २ दरख्त होते हैं मेधे को ताकत देती है शामा है मुंह को खुशबूदार करती है अग्नी को बढाती है तेज़ है बात और कफ को दूर करती है दमा शूल और किरम को दूर करे बवासीर को दूर करे श्वेत मिर्च और काली मिर्च के गुण समान हैं प्रायः आंखों के लिए श्वेत-मिर्च लाभ कारी है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा १ मासे बदला मघां (पीपल) ॥

१२८ माहल कंगनी

नाम

संस्कृत--ज्योतिषमती
हिंदी--मालकंगणी
बंगाली--लनकड़वी
गुजराती- मालकंगणी
मरहटी--मालकांगणी
करणाटकी--कांगुएड्ड
अंग्रेजी--स्टफ्ट्री
लैटन--सैलेंड्रस रसपानिकयुलटे
फारसी--मालकंगणी

गुण

एक मशहूर बीज है जो एक फल से निकलता है बीजों में से तेल निकलता है यह तेल कई प्रकार के वाई रोग और खुजली को हटाता है ताकत दे वीर्य बढ़ाए वर्ण सुन्दर करे घाव, पांडु रोग और उदर की पीड़ा को दूर करे है। तासीर गर्म खुश्क है॥

१९८ मिरजान (मूंगे का दरख्त)

नाम

संस्कृत—परवाल
हिंदी—मूंगा
बंगाली—पला
मरहटी—पोंवल
गुजराती—परवाला
तेलंगी—परवालके
अंग्रेजी—रैड कोरल
फारसी—मिरजान
अरबी—पहेमखुसमुद

गुण

मूंगे का दरख्त समुद्र में होता है रंग लाल होता है मूंगा दीपन है भूख बढ़ाता है ताकत देता है पांडु, स्वास, खांसी, और मेद रोग को दूर करे वीर्य बढ़ाए नेत्र रोग को दूर करे, मूंगे की जड़ काबज है खुष्की करे लहू बन्द करे नेत्रों के लिए लाभकारी है अन्दर के जखम दूर करे खफकान को दूर करे तासीर ठंडी खुष्क है मात्रा १ माशे।

बदला—कैरबा

१२७ मुलठी

नाम

संस्कृत--यष्टीमधु
हिंदी--मुलठी
बंगाली--यष्टीमधु
मरहटी--ज्येष्टीधन
गुजराती--जठेमधनो
अंग्रेजी--लीकरमरूट
फारसी--बेखमहक
अरबी--अमल अलसूस

गुण

एक दरखत की जड़ है रंग भूरा पलतनी कुछ कदर मीठी होती है पियास बुझाए मेधे की सोजश को दूर करे नेत्रो के लिए लाभकारी है वर्ण को सुन्दर करे वीर्य बढ़ाए आवाज सुधारे; पित्त वात, फोड़ा, सोज वमन पियास और खांसी को दूर करे इसके सत को रूबसूस कहते हैं इस में मुलठी से अधिक गुण हैं मुलठी हमेशा छीलकर औषधी में डालो तासीर गर्म खुश्क है।

मात्रा ६ माशे ॥

१३० मैनफल

नाम

संस्कृत—मदन
हिंदी— मैनफल
बंगाली—मेथनाकाटा
मरहटी—गेल
गुजराती—फोल
तैलगी—बसन्तकर्डिमिचेट्ठ
नैपाली, पहाड़ी—मैदल
अंग्रेजी—ब्रुशीगारडिनिया
अरबी—जौज़मालकी

गुण

एक दरखत का फल है जो अंजीर के बराबर मोटा होता है इसका छिलका औषधिया में बरता जाता है वमनकारक है जुकाम और फोड़े को दूर करता है कफ सोज और घाव का नाश करे बवासीर और तप को हटाए बलगम साफ करे दस्तावर है तासीर गर्म खुश्क है।
मात्रा १ माशा।
बदला-राई॥

१३२ राई

नाम

संस्कृत—राजिका
हिंदी—राई
बंगाली—राई सरखे
मरहटी—मोहरी
गुजराती—राई
कर्णाटकी—सासीराई
तैलंगी—बर्णालु
अंग्रेजी—मस्टर्डसीडस
अरबी—खरदल

गुण

एक प्रकार के सरसों जितने बड़े दाने होते हैं रंग लाली पर होता है वात प्लीह और शूल का नाश करे कफ गुल्म और किरम रोग का नाश करे तेज है अग्नि बढ़ाए कोढ़ कंडु और फोड़े को दूर करे लहू साफ करे पेशाब लाए तासीर गर्म खुश्क है।

मात्रा ३ माशा।

बदला-हरमल ॥

१३१ रतनजोत

नाम

संस्कृत—वृहद्दन्ती
हिंदी—रतनजोत
मरहटी—थोग्दन्ती
गुजराती—रतनजोत
कर्णाटकी—एरंडनेदंती
अंग्रेजी—दीफिज़ीकंट
लैटन—करकस मलटी फीडस
फारसी—शकाए हजुवा
अरबी—मयुखलसा

गुण

। एक प्रकार की घास है लेकिन मुई हुई होती है इसके ऊपर से छाल उतरती है रतन जोत वीर्य को बढ़ाए ताकत दे वात और दाह कारक है दस्तावर है किरम को दूर करे शूल कुष्ट और उदर रोग को दूरकरे दस्त बन्द करे हैज़ जारी करे पथरी तोड़े इस को लेप सोज श्वेतकुष्ट और ईयां कोदूर करे है तासीर गर्म ख़ुरक है माशा ६माशा ॥

१३४ रासना

नाम	गुण
संस्कृत–रासना हिन्दी–रासना मरहटी–नाकुलीन्या गुजराती–रासना कर्णाटकी—रसना वेदारे फारसी—रासुन अरबी—जंजबील शामी	एक खुशबूदार जड है रंगलाल होता है मसाने को ताकत दे हाजमा दे जिगर का सुदा खोले लहू के विकार और हिचकी को दूर करे पेट के रोग और सब तरह के बाई रोग दूर करे वर्ताव में जड आती है मात्रा १॥ तोला

१२१ राल

नाम

हिंदी—राल
बंगाली—धूना धूनो
मरहटी—राल पिवली
गुजराती—राल
तिलंगी—सरजरस
तिलंगी—सरेज
पंजाबी—राल
अंग्रेजी—येलोरोजन
लैटन—रिगिनाफलेव
फारसी—राल मगरबी
अरबी—कनकहर

गुण

राल दो प्रकार की होती है एक कान से निकलती है दूसरी शाल दरख्त की गोंद है राल ज़ख्मों को साफ करती है और भरती है, मिरगी जलोधर और खांसी को दूर करती है खारश फोड़ा फुन्सी और दाद को दूर करे टूटी हड्डी को जोड़े है तासीर गर्म खुश्क है मात्रा ७ रत्ती ॥

१३६-लज्जावती
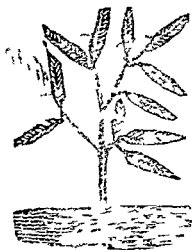
नाम

संस्कृत—लज्जालु
हिंदी—लज्जावंती
पंजाबी—छुई मुई
बंगाली—नाजुक
मरहटी—लाजरी
गुजराती—दिशामणी
कर्णाटकी—मुद्दिदरे मुरव
लैटन—माईमो पसैनस्तीवा

गुण

एक मशहूर घास है जो बहुत नाजक होता है हाथ लगाते ही मुरझा जाता है और फिर सीधा होजाता है फूल रंग बरंगी होते हैं पत्ते खैर कतरा कफ पित्त रक्तविकार को दूर करे अतिसार और योनी रोग को दूर करे सोज दाह स्वास, वात और कुष्ट को दूर करे तासीर ठंडी तर है ॥

१३५ रेंवद चीनी

नाम
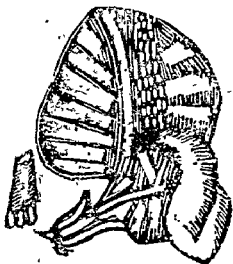
संस्कृत—पीतमूली
हिंदी—रेंवदचीनी
बंगाली—रेऊचीनी
मरहटी—रेवा चीनी
अंग्रेजी—रूबरब
फारसी—मेवजिगरी
अरबी—रावन्द

गुण

एक जड़ है जो ची
मुल्कों से आती है का
स्तान में भी उत्पन्न
खांसी को दूर करे
अजीर्णता को दूर
मदाग्नि को हटाए
कुष्ट और फोड़े व

१२८ लिसूड़ा।

नाम	गुण।
संस्कृत—भूकरचुदार। हिन्दी—लिसूड़ा (लसूड़ियां)। बंगाली—बहूवार। मरहटी—हींकर। गुजराती—गुंदो मोटे। कर्णाटकी—चलुगोंटिणी। तैलंगी—नाकेरु। अंग्रेजी—नेरोलिव्ड सैपिस्टन। फारसी—सापिस्तान मुखातीया। अरबी—सफिस्तान, दबक।	हिन्दुस्तान के एक दरख्त का फल है जिस के पत्ते गोल कुछ लम्बे और फल दो प्रकार के लगते हैं एक छोटे एक बड़े पत्ते खुरदरे होते हैं, खांसी, बलगम को दूर करे, पेशाब की चीस को दूर करे मुवाद को पका कर खारज करता है कृमि

का नाश करे भूख बढ़ाए लहू के विकार को दूर सीने की दर्द और गरमी के तप को दूर करे है तासीर दिल है। बदला खतमी ॥

१२७ जावकट सरैया

नाम

संस्कृत--सैरेयक
हिंदी--कटसरैया
पंजाबी--पिंडोबांसा
बंगाली--झांटी
मरहटी--नियोलाकोंटा
गुजराती--कांटा अशोलियो
कर्णाटकी--हयणदगारटे
तलंगी--गोरँट्ट
लैटन--चारलेरीया

नाम

इस के दरखत होते हैं लाल रंग के फूल लगते हैं चेहरे की छाईयां को दूर करे लहू के विकार को बलगम वा खांसी को दूर करे दांतों को मजबूत करता है कुष्ट रक्तविकार और सोज को दूर करे है तासीर गर्म है ॥